

आर्य

ఆర్క జీవన్



जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
हिन्दी-तेलुगु-मल्यालम-उर्दू-पञ्जाबी-संस्कृत

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

देश में कोई नेता है क्या ?

‘डॉ. वेदप्रताप वैदिक’

जैसा कि मैंने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर लिखा था, लगभग वही हुआ। पटाखों की बिक्री पर लगी रोक से कोई खास मतलब सिद्ध नहीं हुआ। लोगों ने जमकर पटाखे छुड़ाए और दिल्ली में प्रदूषण २३ गुना ज्यादा बढ़ गया। इसी दिन छपे ‘लांसेट’ के सर्वेक्षण के मुताबिक भारत में २०१५ में प्रदूषण के कारण कोई २५ लाख लोग मौत के घाट उतर गए। सरकार ने इस सर्वेक्षण के आंकड़े पर कई प्रश्न-चिन्ह लगाए हैं और इस बात को रद्द कर दिया है कि प्रदूषण के कारण



मरनेवाले लोगों की सबसे ज्यादा संख्या भारत में है। हो सकता है कि हमारी सरकार का अभिमत ठीक हो लेकिन आज देश को यह सवाल खुद से पूछना चाहिए कि भारत में नेतृत्व नाम की कोई चीज है या नहीं ? नेता नाम का कोई व्यक्ति है या नहीं ? नैतिक बल नामक कोई शक्ति है या नहीं ? हर काम हम डंडे के जोर पर कराने के आदी हो गए हैं। हम सोचते हैं कि अदालत फैसला कर देगी तो लोग मान लेंगे। सरकार कानून बना देगी तो वह नीति लागू हो जाएगी। यह ठीक है कि शासन चलाने में अदालतों, सरकारों, कानूनों, दंड-विधानों की निश्चित भूमिका है लेकिन समाज सिर्फ इनसे नहीं चलता है। समाज को चलाने के लिए जिस

नैतिक शक्ति की आवश्यकता है, जिसे नेतृत्व कहते हैं, उसका अभाव दिखाई पड़ रहा है। कानून तो है लेकिन इसके बावजूद पटाखे बिके और छूटे, कानून तो है लेकिन शराब धड़ल्ले से पी जा रही है, कानून के बावजूद गोवध होता रहता है, कानून का डर है जरूर लेकिन रिश्वत खाने में छोटा-से बाबू और बड़े से बड़े प्रधानमंत्री भी कोई संकोच नहीं करते। हमारे साधु-संन्यासी, मौलवी-पादरी, गुरु और ग्रंथी क्या कर रहे हैं ? वे करोड़ों लोगों से संकल्प क्यों नहीं कराते कि वे न

रिश्वत लेंगे और न देंगे, नशाखोरी नहीं करेंगे, शाकाहार ही करेंगे, अंग्रेजी में अपना काम कम से कम करेंगे, न दहेज लेंगे, न देंगे, अपने दस्तखत स्वभाषा में ही करेंगे, हर व्यक्ति कम से कम एक पेड़ लगाएगा आदि। इस तरह के संकल्प स्वाधीनता संग्राम के दिनों में महर्षि दयानंद, बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, विनोबा और लोहिया जैसे लोग करवाते रहते थे। वे असली नेता थे। कहां चले गए वे नेतागण ? उनका आचरण अनुकरण करने लायक होता था लेकिन अब हमारे नेताओं को सिर्फ वोट और नोट की चिंता रहती है। उनमें इतना नैतिक बल है ही नहीं कि वे आम लोगों से शुभ-संकल्प करवाएं।

Lack of rationality lets frauds become 'godmen'

Why, in an age that has deified freedom, do millions freely embrace slavery in the name of spirituality?



So-called godmen like Gurmeet Singh and Asaram Bapu among others are meant to deliver the truth and tenets about spirituality to followers. But this begs the question, do we need an angel from heaven to tell us that spirituality and covetousness cannot co-exist? Can we think of a single instance of an authentic spiritual being who became opulent in his lifetime, on account of his work? How is it then, that our hyper-modern godmen and godwomen are rolling in wealth?

Is there any precedent in any spiritual tradition of anyone who is godly creating a fortress of secrecy around himself? We associate spirituality with light. Are not dens akin to darkness, rather than light? Do we know of a single instance in which what is good or lawful ever needed iron curtains of secrecy?

What should worry us, besides the above, is the readiness of the masses to embrace slavery. The denizens of the dens of 'godmanity'—a perversion of divinity—are voluntary slaves. Why, in an age that has deified freedom, do millions of human beings freely embrace slavery in the name of spirituality?

From time immemorial members of our spirit combine. To 'grow' humanly, therefore, is to grow in terms of all three dimensions. Fraud godmen thrive on the detritus of rotten religiosity that, by refusing to empower

human beings with the light of reason, keeps them vulnerable to the predator that prowls in the darkness of blind faith.

A society that abdicates the duty to propagate a scientific temper and rational outlook abandons people to wolves in sheep's clothing. Mistaking spirituality for psychological dependence, they become like creepers that need something to climb on. This is an open invitation to the Gurmeet Singhs of this world!

We have no excuse for not knowing that our godmen are not religious at all. They are like hunters in the wild. They are experts in knowing and plying the ropes of society, donning the attire that serves to deceive victims, and masking their perversenature.

The pestilence of 'godmanity' will not subside with putting one Gurmeet behind bars. The antidote to this perversion is the education of the people and their all-round development as human beings. It is certain that no one with even minimal mental and spiritual discernment will succumb to the wiles of these wolves, with their mouth-dripping with blood for those who have eyes to see. It is only the territory that the State abandons via quid pro quo that godmen annex. And that is where remedial action needs to begin.

*Swami Agnivesh is an Arya Samaj Scholar and Social activist
Valson Thampy is a Christian theologian and former principal of St. Stephen's College Un..... of Delhi*

शहीद अशफाकुल्ला खान

रख दे कोई जरा-सी खाके वतन कफन में
अशफाकुल्ला खाँ की याद में

आज क्रांतिकारी अशफाकुल्ला खाँ की 99वीं जयंती है। शहीद अशफाकुल्ला का जन्म आज ही के दिन 22 अक्तूबर, 1900 को शाहजहाँपुर में मुहम्मद शफीकुल्ला खाँ के परिवार में हुआ। स्कूली दिनों में जब अशफाक ने वाल्टर स्कट की कविता 'लव अहफ कंट्री' (देशप्रेम) पढ़ी, तो उस कविता ने अशफाक के बालमन पर गहरी छाप छोड़ी। आगे चलकर 'वारसी' और 'हसरत' उपनाम से शायरी लिखने वाले अशफाक ने अपने उत्कट देशप्रेम को अभिव्यक्त करते हुए लिखा।

कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है
रख दे कोई जरा-सी खाके वतन कफन में।
गुलामी की टीस अशफाक के मन में कहीं गहरे चुभ रही थी, जैसा कि बाद में उन्होंने लिखा भी कि "किसी की हुकूमत अपने ऊपर कबूल करना हमारी पस्तहिम्मती और बदबख्ती है।" हिंदुस्तान के बारे में उनकी उम्मीद यही थी कि बहुत ही जल्द दूरेगी गुलामी की ये जंजीरें किसी दिन देखना आजाद ये हिन्दोस्तान होगा। पर सिर्फ हुकूमत में बदलाव करना अशफाक का लक्ष्य नहीं था, उनके अनुसार "मैं विदेशी हुकूमत को बुरा समझता हूँ और साथ ही साथ हिंदुस्तान की ऐसी जम्हूरी सल्तनत को भी जिसमें कमोजोरों का हक हक न समझा जाए, या हुकूमत जो सरमायादारों और जमींदारों के दिमागों का नतीजा हो, या जिसमें मसावी (बराबर) हिस्सा मजदूरों और काश्तकारों का न हो।" अंग्रेजों की "बाँटो और राज करो" की नीति और हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक तनाव के प्रति चेताते हुए अशफाक ने लिखा

ये झगड़े और बखेड़े मेटकर आपस में मिल जाओ, ये तफरीके अगस है, तुममें हिंदू और मुसलमाँ की।

आगे चलकर वे क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के संपर्क में आए, जो 1919 के प्रसिद्ध 'मैनपुरी षड्यंत्र केस' के प्रमुख अभियुक्त थे। बिस्मिल की सक्रियता से शाहजहाँपुर उन दिनों क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र बन गया था। जहाँ योगेशचन्द्र चटर्जी, शचीन्द्रनाथ बख्शी, राजेंद्रनाथ लाहिड़ी, विष्णुशरण दुबलिश, रामदुलारे त्रिवेदी, राजकुमार सिन्हा, केशव चक्रवर्ती, दामोदरस्वरूप सेठ, गोविंदचरण कार, रामनाथ पांडे, बनवारीलाल सरीखे क्रांतिकारी जुटते और योजनाएँ बनाते।

बीस के दशक में संयुक्त प्रांत (यूपी) में क्रांतिकारी केंद्रों की स्थापना और उनके संगठन का काम योगेशचन्द्र चटर्जी शचीन्द्रनाथ सान्याल ने किया। इन दोनों ने 'हिंदुस्तान प्रजातंत्र संघ' की स्थापना की। उत्तर भारत में उस वक्त क्रांतिकारी संगठन आर्थिक संसाधनों के अभाव में बुरे दौर में थे। ऐसी स्थिति में बिस्मिल के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने रेल का खजाना लूटने की योजना बनाई।

6 अगस्त 1925 को 7 डाउन पैसेंजर गाड़ी जैसे ही काकोरी और आलमनगर स्टेशन के बीच पहुँची, पहले से सवार क्रांतिकारियों ने जंजीर खींचकर ट्रेन रोक दी और गार्ड के डिब्बे से खजाने का संदूक ले लिया। इसमें भाग लेने वाले क्रांतिकारी थेरू अशफाकुल्ला, बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद, मन्मथनाथ गुप्त, शचीन्द्रनाथ बख्शी, राजेंद्रनाथ लाहिड़ी, केशव चक्रवर्ती, मुरारीलाल, मुकुंदीलाल।

क्रांतिकारियों द्वारा खजाने की लूट को अंजाम दिये जाने पर अंग्रेज सरकार बुरी तरह बौखला गई। फिर शुरू हुआ गिरफ्तारियों और सजाओं का दौर। जेल में रहते हुए भी अशफाक, बिस्मिल सरीखे क्रांतिकारी तमाम झंझावातों को झेलते हुए न कभी निराश हुए न अपनी देशप्रेम की भावना से कभी डिगे। बल्कि अशफाक ने तो लिखा है

दहलता है कलेजा दुश्मनों का देखकर 'हसरत',
चला करते ही जब बेड़ी पहनकर शादमाँ होकर।

अंततः बिस्मिल, अशफाक, राजेंद्रनाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी की सजा सुनाई गई और दूसरे साथियों को आजीवन कारावास की। 19 दिसंबर 1927 को फाँसी देने का दिन नियत किया गया। पर राजेंद्रनाथ लाहिड़ी को दो दिन पहले ही 17 दिसंबर को गोंडा जेल में फाँसी दे दी गई, जबकि बिस्मिल, अशफाक और रोशन सिंह को 19 दिसंबर को क्रमशः गोरखपुर, फैजाबाद और इलाहाबाद की जेल में फाँसी दी गई। फाँसी के तख्ते पर जाने से पहले बिस्मिल ने कहा

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे। जब तक कि तन में जान और रगों में लहू रहे, तेरा ही जिफ़ या तेरी ही जुस्तजू रहे।

और अशफाक ने फैजाबाद जेल में कालकोठरी से निकलने से पहले यह शेर लिखा

तंग आकर हम भी उनके जुल्म के बेदाद से
चल दिए सूए-अदम जिंदाने-फैजाबाद से।

राष्ट्रीय आन्दोलन फ्रंट (National Movement Front) के वरिष्ठ नेता भाई शुभनीत कौशिक (Shubhneet Kaushik) की टाइमलाइन से साभार (सौजन्य रूपेश)

हवन में होने वाली दहन क्रिया

वैज्ञानिक विश्लेषण

-डॉ. रामप्रकाश

कुछ लोगों का विचार है कि उत्तम पदार्थों को खाने की अपेक्षा अग्नि में जलाकर नष्ट कर देना उचित नहीं। महर्षि दयानन्द ने इस शंका का समाधान करते हुए लिखा है, “जो तुम पदार्थविद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते, क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता।”¹ यह उक्त स्पष्टतया वैज्ञानिक है। जैसे अभाव से भाव की उत्पत्ति सम्भव नहीं वैसे ही भाव को भी अभाव में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। “शास्त्र में लिखा है कि ‘नास्त आत्मलाभः, न सत आत्महानम्’, अर्थात् जो नहीं है वह कभी हो नहीं सकता और जो है वही आगे होता है। अस्ति से अस्ति होती है। नास्ति से किसी प्रकार नहीं हो सकती।”² ऋषि दयानन्द मानते हैं कि प्रकृति अनादि (जिसका अन्त न हो, अर्थात् जिसे नष्ट न किया जा सके) है। इसका समर्थन आधुनिक विज्ञान ने द्रव्य अविनाश नियम (Law of Conservation of Mass) के द्वारा किया है। इस नियम के अनुसार “किसी भी रासायनिक प्रतिक्रिया में भाग लेने वाले पदार्थों के भार का योग अपरिवर्तित रहता है।”³

अग्नि में आहुति देने से हानि तो कई नहीं, लाभ अवश्य है। जब अग्नि में कोई वस्तु डाली जाती है तो अग्नि उसके स्थूलरूप को तोड़कर सूक्ष्म बना देती है। यजुर्वेद (१/८) में अग्नि को धूरिस कहकर इसी सत्य को प्रतिपादित किया गया है। धूरिस का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है, “भौतिक अग्नि सब पदार्थों का छेदन औ अन्धकार का नाश करने वाला है।”⁴ “भौतिक अग्नि इसलिए है कि वह उन होम-द्रव्यों को पमाणूप करके वायु औ जल के साथ मिलकर शुद्ध कर दे।” यह है भी दैनिक अनुभव की बात। एक मन दाल में एक ग्राम हींग का कुछ प्रभाव नहीं होता; परन्तु वही हींग भूनकर छौंक लगाने से सारी दाल को सुगन्धित कर देता है। मिर्च खाने से केवल खाने वाले व्यक्ति पर ही उसका प्रभाव पड़ता है, किन्तु इसे भली प्रकार पीसकर उड़ा देने से आस-पास बैठे व्यक्ति खाँसने लगते हैं। उसी मिर्च को जलाने से बहुत लोगों पर उसकी तीक्ष्ण गन्ध का प्रभाव होता है, अतः अग्नि में डाल देने से पदार्थ हल्का होकर शीघ्र सारी वायु में फैल जाता है। उसकी भेदक शक्ति बढ़ जाती है। यह तथ्य ग्राहम के गैसीय व्यापनशीलता के नियम (Graham's Law of Diffusion of Gases) का आधार है। इस नियम के अनुसार “निश्चित ताप और दबाव प गैसों की व्यापन गतियाँ उनके घनत्वों के वर्गमूल की विपरीत अनुपाती होती हैं।”⁵ अतः जो गैस जितनी हल्की होगी, वह उतनी ही शीघ्र वायु में मिल सकेगी। ऐसा ही यजुर्वेद (६/१६) में कहा है-

स्वाहाकृतेर्ज्वर्यनभसं मातुं गच्छतम् ।

“यज्ञ में स्वाहापूर्वक आहुति देने से वायु ऊपर आकाश में जावे।”

प्राचीन भातीयों को अर्द्ध-शिक्षित मानने वालों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान तथा अंग्रेजी पढ़े बिना भी ऋषि दयानन्द ने लिखा है, “अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके, फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति कता है।”

ऋषि आगे लिखते हैं, “सुगन्ध (केसर, कस्तूरी, पुष्प, इत्र आदि की सुगन्ध) का वह सामर्थ्य नहीं कि गृहस्थ वायु को बाहर निकालकर शुद्ध वायु का प्रवेश करा सके; क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है; और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकालकर पवित्र वायु का प्रवेश का देती है।”⁶ “अतर औ पुष्प आदि का सुगन्ध तो उसी दुर्गन्ध वायु में मिलकर रहता है, उसमें छेदन करके बाहर नहीं निकाल सकता, और न वह ऊपर चढ़ सकता है, क्योंकि उसमें हल्कापन नहीं होता। उसके उसी अवकाश में रहने से बाहर का शुद्ध वायु उस ठिकाने में जा भी नहीं होता। उसके उसी अवकाश में रहने से बाह का शुद्ध वायु उस ठिकाने में जा भी नहीं सकता, क्योंकि खाली जगह के बिना दूसरे का प्रवेश नहीं हो सकता।”⁷ अतः स्पष्ट है कि यदि ऋषियों ने वायुशुद्धि के लिए अग्निहोत्र को अपनाया है तो किसी अन्धविश्वास के कारण नहीं, अपितु वैज्ञानिक आधार पर।

अग्निहोत्र में किन-किन रासायनिक परिवर्तनों के द्वारा क्या-क्या पदार्थ उत्पन्न होते हैं- इसका निश्चय करना कठिन है, क्योंकि-

(क) यज्ञकुण्ड में सर्वदा तापांश समान नहीं रहता। तापांश भिन्नता के कारण एक ही हव्य-द्रव्य भिन्न-भिन्न पदार्थ बना सकता है।

(ख) यह भी सम्भव है कि रासायनिक क्रिया पूर्ण होने से पूर्व ही जो पदार्थ बने हैं वे आपस में मिलकर कोई अन्य पदार्थ बना लें या उड़कर वायु में मिल जाएँ।

(ग) यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक ऑक्सीकरण सदा पूर्ण हो ही जाए, क्योंकि वायु की मात्रा न्यूनाधिक होती रहती है।

फिर भी यज्ञ के द्वारा उत्पन्न होने वाले पदार्थों का अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। हाँ, यह निश्चय करना कठिन है कि कितनी सामग्री डालने से कौनसा पदार्थ कितनी मात्रा में उत्पन्न होगा।

अब हव में डाले जाने वाले पदार्थों के जलने पर उत्पन्न होने वाली गैसों पर विचार आरम्भ करते हैं-

कपूर कपूर आसानी से जलता है, अतः यज्ञाग्नि कपूर जलाकर प्रज्वलित की जाती है। यह जलते समय धुआँ उत्पन्न करता है। इसका कुछ भाग बिना किसी रासायनिक परिवर्तन के उड़ जाता है जो वायु में मिलकर उत्तम सुगन्धि उत्पन्न करता है। वस्तुतः यह दुर्गन्ध को नष्ट नहीं कर पाता, अपितु उसे अपनी सुगन्ध से मात्र छिपा लेता है। कपूर के शेष भाग का एक तैल बन जाता है जिसमें पाइनीन, डाइपैण्टीन, सीनिओल, युजिनाल, सैपेल और टर्पिनिऑल आदि होते हैं।

लकड़ी अग्नि होत्र में जो द्रव्य डाले जाते हैं उनका लगभग ७५ प्रतिशत भाग लकड़ी होती है। इसका मुख्य प्रयोजन अग्नि प्रज्वलित रखना है, अतः आवश्यका से अधिक समिधाएँ डालने का विशेष लाभ नहीं है। इसके जलने से लगभग ५००° सेल्सियस तापांश हो जाता है।

लकड़ी के मुख्य भाग सेलुलोस तथा लिग्नेसेलुलोस में लगभग

४७.६२ प्रतिशत हाइड्रोजन, २८.५७ प्रतिशत कार्बन तथा २३.८१ प्रतिशत ऑक्सीजन होती है। लकड़ी के जलने का अभिप्राय सेलुलोस तथा लिग्नोसेलुलोस का ऑक्सीकृत हो जाना है। फिर धीरे-धीरे जो हाइड्रोकार्बन बनती है, वे ४००-६००° सेल्सियस के बीच जल जाती हैं। सेलुलोस तथा लिग्नोसेलुलोस ऑक्सीजन के साथ मिलकर कार्बन डाइऑक्साइड तथा पानी बनाते हैं (द्रष्टव्य समीकरण १)। पानी भाप बनकर उड़ जाता है तथा कार्बन डाइऑक्साइड वायु में मिल जाती है।

यदि वायु का प्रवेश कम हो तो कुछ कार्बन मोनोऑक्साइड गैस (समीकरण २) तथा कार्बन की धूल (समीकरण ३) भी बन सकती है, परन्तु यज्ञवेदी खुला स्थान होने से वायु भली प्रकार आती रहती है; अतः कार्ब मोनोऑक्साइड बननी भी नहीं चाहिए, क्योंकि यह विषैली गैस है। हाँ, कार्बनधूलि हानिकारक नहीं है; अपितु यह वर्षा में सहायक है।

यज्ञकुण्ड की बनावट, समिधाओं की लम्बाई तथा उनके रखने की विधि, तापांश और वायु-मात्रा निर्धारित कर देती है कि हवन के समय लकड़ी की आसवन-क्रिया हो जाने का पूरी सम्भावना है आसवन-क्रिया के कारण अनेक पदार्थ पैदा होते हैं। फिर ये पदार्थ आपस में मिलकर कई अन्य पदार्थ बना लेते हैं। इस प्रकार समस्त क्रिया पेचीदा बन जाती है और उत्पन्न गैसों का सही अनुमान लगाना कठिन हो जाता है। यज्ञ में तो यह कार्य और भी कठिन है, क्योंकि वायु और गर्मी की मात्रा न्यूनाधिक होती रहने से परिस्थितियाँ भी निश्चित नहीं हो पाती।

हाले और पामर^{१०} का विचार है कि आसवन-क्रिया के आरम्भ होते ही लकड़ी सूखना प्रारम्भ कर देती है। इस समय अधिक मात्रा में पानी तथा थोड़ा-सा ऐसीटिक एसिड और मैथेनॉल भी बनता है। उसके पश्चात् कई गैसें उत्पन्न होती रहत हैं।

पाश्चात्य वैज्ञानिक बुर्ग ने लकड़ी की आसवन-क्रिया के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण कार्य किया है। वह इस प्रकार पैदा होने वाली गैसों में एक सी से भी अधिक पदार्थों की पहचान करने में सफल रहे हैं। उनके अनुसार इस क्रिया के कारण कई हाइड्रोकार्बन (मैथेन, बैज्जीन आदि), ऐल्डिहाइड (फार्मेल्डीहाइड, ऐसीट ऐल्डिहाइड, फरफ्युरल, प्रोपिऑन ऐल्डिहाइड आदि), कीटोन (ऐसीटोन, मेथिल

एथिल कीटोन आदि), अम्ल (फार्मिक अम्ल, ऐसीटिक अम्ल, प्रोपिऑनिक अम्ल एवं नार्मल कैप्रोइक अम्ल आदि), एल्कोहॉल (मेथिल एल्कोहॉल, एथिल एल्कोहॉल आदि), फीनोल, कार्बन डाइऑक्साइड तथा पानी उत्पन्न होते हैं।

कौन-सा पदार्थ कितनी मात्रा में उत्पन्न होता है, यह लकड़ का बनावट, तापांश, दूसरे पदार्थों की विद्यमानता आदि पर निर्भर करता है। उत्पन्न द्रव्यों में एल्कोहॉल तथा कार्बनिक अम्ल भी हैं, अतः वे परस्पर मिलकर एस्टर बना लेंगे।

यह अनुमान लगाना कठिन है कि पूर्व उल्लिखित पदार्थ किन-किन रासायनिक परिवर्तनों के कारण बनते हैं, परन्तु क्लेसन के विचारानुसार आसवन-क्रिया के समय जो ऐसीटिक एसिड बनता है, वही टूटकर ऐसीटोन बना देता है तथा अन्य कीटोनज भी इसी प्रकार अपनी संगत के अम्लों से ही उत्पन्न होती हैं (समीकरण ४)। यहाँ हाइड्रोजन भी बनती है, किन्तु आसवन-क्रिया से उत्पन्न होने वाले पदार्थों में क्लेसन व उनके सहयोगी हाइड्रोजन गैस प्राप्त नहीं कर सके थे; यद्यपि कुछ अन्य वैज्ञानिकों ने इस गैस को भी विद्यमान पाया है।

यहाँ जो हाइड्रोकार्बन उत्पन्न हुई हैं, उनमें भी कई परिवर्तन होते रहते हैं। उदाहरणार्थ मैथेन से ऐसीटिलीन तथा हाइड्रोजन आदि बन सकते हैं (समीकरण ५)। यह हाइड्रोजन अन्य पदार्थों के साथ मिलकर नए पदार्थ बना सकती है तथा वायु में मिल सकती है।

रालयुक्त लकड़ी के जलने तथा आसवित हो जाने पर मुख्यतः फार्मेल्डीहाइड की उत्पत्ति होती है, किन्तु कुछ मात्रा में टर्पिनिऑल, टर्पिन, सीनिओल तथा अन्य उड़नशील पदार्थ भी बनते हैं।^{१०}

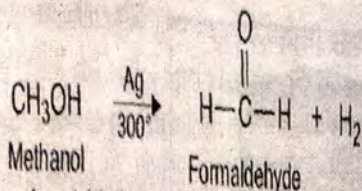
लकड़ी के जलने पर बची राख की मात्रा कम-से-कम ०.२ प्रतिशत तथा अधिकाधिक ४ प्रतिशत होती है। साधारणतया राख १ प्रतिशत से कम ही बनत है। इसमें मुख्यतः कैल्सियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम तथा थोड़ी मात्रा में ऐलुमिनियम, लोहा, मैंगनीज, सोडियम, फॉस्फोरस तथा गन्धक आदि होती हैं। पोटैशियम ऑक्साइड की विद्यमानता के कारण खाद के रूप में भी राख का प्रयोग किया जा सकता है। किसी समय राख को पौटेश-प्राप्ति का मुख्य साधन समझा जाता था।

घृत कपूर द्वारा अग्नि प्रदीप्त कर समिधाओं पर घृत की आहुतियाँ देनी प्रारम्भ की जाती हैं। घी अग्नि को प्रज्वलित रखता है, परन्तु यदि इसका मात्र यही एक प्रयोजन होता तो किसी भी तेल या घी का प्रयोग किया जा सकता था; किन्तु शास्त्रों में गोघृत का विधान किया गया है। ऐसा क्यों? इसका कारण है कि शुद्ध गोघृत जलने पर कोई हानिकारक पदार्थ उत्पन्न नहीं करता जबकि वनस्पति घी को जलाने का स्वास्थ्य पर सुखद प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रसङ्ग में डॉक्टर फुन्दनलाल अग्निहोत्री एम.डी. ने कुछ कार्य किया है। उन्होंने टी.बी. सेनेटोरियम जबलपुर में टी.बी. के रोगियों की यज्ञ के द्वारा चिकित्सा करने का प्रयास किया। उनके अनुभवानुसार गाय के घी से यज्ञ करने पर रोगी शीघ्र आरोग्य हुए। भैंस के घी से बहुत देर में लाभ हुआ, परन्तु वनस्पति घी के प्रयोग से रोग बढ़ना प्रारम्भ हो गया,^{११} अतः वैदिक शास्त्रों में यज्ञ के लिए गोघृत प्रयोग करने का विधान है।

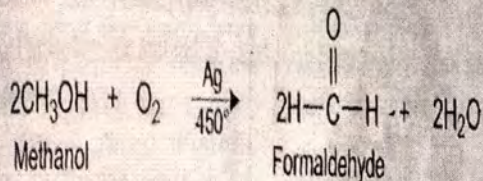
घी ग्लिसरॉल तथा कार्बोक्सिलिक अम्लों के मेल से बना है। घी में पाये जाने वाले अम्लों में पामिटिक अम्ल, ओलीक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल, स्टिऐरिक अम्ल तथा लिनोलीइक अम्ल मुख्य हैं। वैसे इसमें थोड़ी मात्रा में ब्यूटिरिक अम्ल, लौरिक अम्ल, कैफ्रिलिक अम्ल तथा कैप्रोइक अम्ल आदि भी होते हैं। अतः घृत के जलने से वही पदार्थ उत्पन्न होते हैं, जो ग्लिसरॉल तथा उपर्युल्लिखित अम्लों की दहन क्रिया पर बनते हैं। इसलिए इन पदार्थों के ऑक्सीकरण आदि पर विचार करना उचित है-

ग्लिसरॉल :- ग्लिसरॉल का जलना कुछ जलहरण तथा कुछ ऑक्सीकरण है। यह मान लेने से फार्मेल्डीहाइड की उत्पत्ति सम्भव हो जाती है; क्योंकि ग्लिसरॉल के परमाणु में से पानी निकलने पर ऐक्रोलीन बन जाती है जो ऑक्सीकृत हो जाने पर फार्मेल्डीहाइड बना देती है (समीकरण ६ तथा ७)।

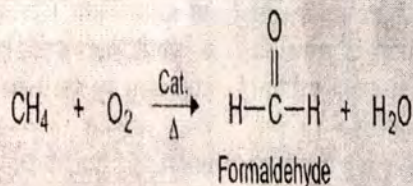
ग्लिसरॉल के ऑक्सीकरण पर कई पदार्थ बनते हैं। डॉक्टर फीनार^{१२} ग्लिसरॉल के ऑक्सीकरण पर ग्लिसर ऐल्डिहाइड, ग्लिसरिक, अम्ल, टार्टरोनिक अम्ल तथा मीसोऑक्सैलिक अम्ल की उत्पत्ति मानते हैं (समीकरण ८)। इनके अतिरिक्त ग्लाइकोल ऐल्डिहाइड, ग्लाइऑक्सल तथा ऑक्सैलिक अम्ल भी बन



(2) By air-oxidation of methanol. Methanol vapours and limited amount of air are passed over heated silver catalyst at 450°C .



(3) By air-oxidation of methane in the presence of various metallic oxides.



Since formaldehyde is a gas, the product is marketed as 40% aqueous solution under the name **formalin**.

Properties. (Physical). Formaldehyde is a colourless gas, bp -21°C . It has an irritating odour. It is extremely soluble in water.

(Chemical). Formaldehyde is different from other aldehydes. It contains no alkyl group in the molecule. Both hydrogen atoms may be regarded as being part of an aldehyde group. As a result, several reactions of formaldehyde are different from those of other aldehydes.

"Formaldehyde has many uses, the most well-known of which is its presence in formalin, which is used for the preservation of biological specimens and embalming, which is a funeral custom of treating human **remains** to delay their decomposition."

Why formalin is used for preserving biological specimens?

"A solution of 35 to 40 per cent of water in **formaldehyde** or methanal is called **formalin**. **Formaldehyde's** formula is HCHO As **formalin** is a strong disinfectant and tissue hardener, it's **used for preserving biological** and anatomical **specimens**. It's also **used** as an antiseptic in sterilising surgical instruments." Aug 22, 2004

What is the difference between formaldehyde and formalin?

What is the difference between formaldehyde and formalin?

"To prevent polymerization of **formaldehyde** solution, about 10 - 15% of methyl alcohol is added. It is the addition of methyl alcohol that causes the substance to be called **formalin** as opposed to **formaldehyde**. We have occasionally encountered some confusion about the **difference between formaldehyde and formalin**." Jan 11, 2016

"To prevent polymerization of **formaldehyde** solution, about 10 - 15% of methyl alcohol is added. It is the addition of methyl alcohol that causes the substance to be called **formalin** as opposed to **formaldehyde**. We have occasionally encountered some confusion about the **difference between formaldehyde and formalin**." Jan 11, 2016

सकते हैं (समीकरण ९) ।

इस प्रकार कई पदार्थों के बनने का सम्भावना है । वास्तविक परिवर्तन तो वायु की मात्रा तथा तापान्श आदि पर निर्भर करते हैं ।

अम्ल :- घृत में सन्तुप्त तथा असन्तुप्त दोनों प्रकार के अम्ल होते हैं । ऑक्सीकरण के समय सन्तुप्त वसीय अम्लों के परमाणु टूटकर कुछ ऐल्डिहाइड बना देते हैं । फिर ये ऐल्डिहाइड ऑक्सीजन के साथ मिलकर अम्ल में परिवर्तित हो जाते हैं । इन अम्लों से हाइड्रोकार्बनों की उत्पत्ति होती है । उदाहरणार्थ-घी में ३०-४० प्रतिशत ओलिक अम्ल होता है । इसके ऑक्सीकरण पर नार्म नॉनलिक ऐल्डिहाइड बन जाता है (समीकरण १०) । नार्म नॉनलिक ऐल्डिहाइड से नानोइक अम्ल एवं ओक्टोन (समीकरण ११) और ओलिक अम्ल से उत्पन्न दूसरे पदार्थ से नार्म ऑक्टिलिक ऐल्डिहाइड, आक्टोनोइन अम्ल एवं हेप्टेन (समीकरण १२) बनती हैं, परन्तु ये तो केवल एक सम्भावना है । इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकार के पदार्थ उत्पन्न होते हैं । इसी प्रकार लिनोलीक अम्ल से कैप्रोनिक ऐल्डिहाइड तथा वैलेरिक ऐल्डिहाइड बनते हैं ।

घृत में विद्यमान सन्तुप्त वसीय अम्ल भाग के साथ मिल साधारण छोटे अम्ल उत्पन्न करता है । फिर यह अम्ल हाइड्रोकार्बन बना सकते हैं । उदाहरणार्थ ब्यूटिरिक अम्ल सर्वप्रथम मेथेन और β -हाइड्रोक्सीप्रोपिऑनिक अम्ल बनाएगा (समीकरण १३ तथा १४) । इसी प्रकार अनेक पदार्थों की उत्पत्ति सम्भव है (समीकरण १५) । यदि अम्लों की दहन-क्रिया पूर्ण हो जाए तो कार्बन डाइऑक्साइड तथा पानी बन जाएगा ।

यह आवश्यक नहीं कि यज्ञ के समय उपर्युल्लिखित सभी क्रियाएँ पूर्ण हों, क्योंकि कई बार पदार्थ ऑक्सीकरण से पूर्व ही वायु में मिल जाता है । उदाहरणार्थ अकेले घी को अग्नि में जलाइए । सुगन्धि उत्पन्न होगी, अतः स्पष्ट है कि यहाँ ऑक्सीकरण पूर्ण नहीं हुआ अन्यथा गन्धरहित कार्बन डाइऑक्साइड गैस बन जाती । यज्ञ के समय पूर्व-उल्लिखित सभी या उनमें से कुछ पदार्थ बनते हैं ।

घी के जलने से जो सुगन्धि उत्पन्न होती है, उसका कारण कैप्रोनिक ऐल्डिहाइड, नार्मल ओक्टिलिक ऐल्डिहाइड, नार्मल नॉनलिक ऐल्डिहाइड, वैलेरिक ऐल्डिहाइड तथा कई अन्य उड़नशील ऐल्डिहाइड व वाष्पशील वसीय

अमल होते हैं । ये सभी वायु में मिल जाते हैं, जिससे सर्वत्र सुगन्धि फैल जाती है ।

घी के जो कण बिना जले ही वायु में उड़ जाते हैं, वे अतिसूक्ष्म होते हैं, ये अग्निहोत्र से उत्पन्न गैसों को स्वयं में लीन करके वायुमण्डल को अधिक समय तक पवित्र रखते हैं । घृत के ये कण वर्षा के लिए धूलिकणों का कार्य भी करते हैं । घी की आहुति देने से जो पदार्थ उत्पन्न होते हैं उनमें हाइड्रोकार्बनों की मात्रा पर्याप्त है । ये हाइड्रोकार्बन यज्ञकुण्ड के तापान्श (४५०-५५०° सेल्सियस) पर ऑक्सीजन से मिलकर कुछ अन्य पदार्थ बना लेते हैं । उदाहरणार्थ-व्हीलर तथा ब्लेयर^{१३} के अनुसार मेथेन ऑक्सीकरण पर मेथिल एल्कोहॉल तथा फार्मेलडीहाइड आदि बना देती है (समीकरण १६) । क्योंकि ये सभी पदार्थ वायु में मिलते रहते हैं, इसलिए फार्मेलडीहाइड के ऑक्सीकृत हो जाने की बहुत कम सम्भावना है ।

इसी प्रकार एथेन, फार्मेलडीहाइड, ऐसीट ऐल्डिहाइड, मेथिल एल्कोहॉल, एथिल एल्कोहॉल, फार्मि ऐसिड आदि अनेक पदार्थ बना देती है ।^{१४,१५}

हव्य सामग्री :- जब अग्नि अच्छी प्रकार प्रचलित हो जाए तो सामग्री की आहुतियाँ दी जाती हैं । सामग्री के द्रव्यों के जलने पर बनने वाले पदार्थों के विषय में अभी अनुसन्धान की आवश्यकता है ।

कपूरकचरी, नागरमोथा, जटामांस, सफेद चन्दन का चूरा तथा अगर आदि लकड़ी की भाँति स्वयं जलकर शेष क्रियाओं के पूर्ण होने के लिए गर्मी भी उत्पन्न करते हैं ।

तिल ग्लिसरॉल तथा इलेइडिक अम्ल व स्टीरैरिक अम्ल के मेल से बना है । इसी प्रकार के कुछ वसीय अम्ल चिरौंजी, नारियल, लौंग, जौ, गेहूँ तथा चावल आदि में भी विद्यमान हैं, अतः इनके जलने से हों अन्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं; वहाँ पूर्व चर्चित वैसे पदार्थ भी बनते हैं, जिनकी उत्पत्ति ग्लिसरॉल तथा वसीय अम्ल के ऑक्सीकरण से सम्भव है ।

यज्ञ-सामग्री की वस्तुओं में कार्बोहाइड्रेट भी विद्यमान है । शर्करा तथा स्टार्च इसी कार्बोहाइड्रेट के दो प्रकार हैं । चावल, गेहूँ, जौ, उड़द, कपूरकचरो तगर आदि में स्टार्च होता है । ऋषि दयानन्द ने यज्ञ में स्टार्च वाले द्रव्यों के भी डालने का विधान किया है । शर्करा वाले द्रव्यों में खाँड़ मुख्य है । यह यज्ञ-

सामग्री में पर्याप्त मात्रा में डाली जाती है । इसके अतिरिक्त शहद, दुग्ध, तगर, गेहूँ, लौंग, दाख, छुहारे, नरकूचर आदि में भी पर्याप्त मात्रा में शर्करा होती है । इनके जलने से स्वास्थ्य के लिए हितकर गैसें उत्पन्न होती हैं । फ्रांस के विज्ञान के एक भूतपूर्व अध्यापक टिलवर्ट का विचार है कि खाँड़ के तेजी से जलने पर (अग्निहोत्र में ऐसा ही होता है) फार्मेलडीहाइड की उत्पत्ति होती है । यह गैस कृमियों का नाश करके वायु को मनुष्योपयोगी बना देती है ।

खाद को वैज्ञानिक भाषा में सुक्रोस कहते हैं । २१०° सेल्सियस पर गर्म करने से इसका पानी उड़ जाता है और कार्मल नामक एक पदार्थ बन जाता है । अधिक गर्म करने पर कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, मेथेन, एथिलीन, ऐसीटिलीन, ऐसीटोन, फार्मिक अम्ल, एथानॉल, ऐक्रोलीन आदि उत्पन्न होते हैं । खाँड़ के ऑक्सीकरण पर ऑक्सैलिक अम्ल तथा सैकेरिक अम्ल बनते हैं ।

मीठे फलों और शहद में ग्लूकोस तथा फ्रक्टोज आदि होते हैं । फलों में इनकी उत्पत्ति सम्भवतः खाँड़ के जलीय विच्छेदन से होती है । इनके ऑक्सीकरण पर भिन्न-भिन्न पदार्थ बनते हैं । उदाहरणार्थ-ग्लूकोस के ऑक्सीकरण पर ग्लूकोनिक अम्ल, सैकेरिक अम्ल और टार्टरोनिक अम्ल बनते हैं (समीकरण १७) । इसी प्रकार अन्य पदार्थ भी ऑक्सीकृत होते रहते हैं । सभी प्रकार के दूध में लैक्टोस होता है । गौदुग्ध में इसकी मात्रा ४-६ प्रतिशत है । इसके ऑक्सीकरण पर सैकेरिक अम्ल भी बनता है ।

यज्ञ के द्वारा वायु सुगन्धित हो जाती है, क्योंकि अग्निहोत्र में कस्तूरी केसर, अगर, श्वेत चन्दन, जायफल जावित्री, लौंग कुलज्जन, वालछड़, इलायची और कपूर आदि भी डाले जाते हैं । ये द्रव्य कुछ वाष्पशील सौरभिक पदार्थ उत्पन्न करते हैं । वस्तुतः पाइनीन, बोर्निओल, सिट्रल, सीनिऑल, टर्पिनिऑल, सैफ्रोल, थाइमोल, कार्वाक्रॉल, सिनेमिक अमल, सैलिसिलिक अम्ल तथा अगर, देवदार, तिल, लौंग और सन्दल के तेल आदि की उत्पत्ति सम्भव दीख पड़ती है ।

कुलज्जन के आसवन पर जो तेल बनता है उसमें ४८ प्रतिशत मेथिल सिनेमेट, २०-३० प्रतिशत सीनिऑल, कपूर तथा सम्भवतया पाइनीन भी होते हैं ।

दालचीनी से जो तेल निकलता है उसमें मुख्यतः सिनेमिक ऐल्डिहाइड तथा कुछ युजिर्नॉल, लिनेलूल तथा पाइनीन आदि मिलते हैं। तेजपत्र आसवन पर सिनेमिक ऐल्डिहाइड, बेजिल-ऐल्डिहाइड, सैफ्रोल तथा युजिर्नॉल बनाता है।

लौंग, भाप के द्वारा होने वाली आसवन-क्रिया पर एक तेल देती है, जिसमें ३४-९५ प्रतिशत तक फीनोल, सैस्क्वीटर्पीन तथा थोड़ी मात्रा में कीटोन, एल्कोहॉल और एस्टर होते हैं। लौंग के तेल में फरफ्यूरल तथा वैनीलिन भी होती है।

जायफल ३०-४० प्रतिशत बसा तथा ५-२५ प्रतिशत वाष्पशील तेल देता है। पावर तथा साल्वे के विचारानुसार इस तेल में ८० प्रतिशत पाइनीन तथा कैम्फीन, ८ प्रतिशत डाइपैण्टीन, ६ प्रतिशत एल्कोहॉल, ४ प्रतिशत माइरिस्टिसिन, ०.६ प्रतिशत सैफ्रोल तथा ०.२ प्रतिशत युजिर्नॉल होते हैं।

आर.एन. चोपड़ा ने लिखा है कि प्रायः चन्दन की लकड़ी को खूब बारीक रगड़कर भाप के साथ गर्म करने पर इसमें से तेल निकलता है जिस में लगभग ९० प्रतिशत सेण्टालोल होता है। यज्ञ में भी चन्दन का चूरा ही प्रयोग किया जाता है। अग्निहोत्र के समय भाप भी काफी बनती रहती है, अतः इस तेल का बनना सम्भव है। लकड़ी के टुकड़ों के स्थान पर चूरे का प्रयोग किया जाना विज्ञान-संगत है। जे.एफ. दस्तूर के अनुसार “चन्दन का यह सुगन्धित तेल अपवित्रता-नाशक, कीड़ों को परे भगाने तथा मारने वाला है।”

देवदार के तेल में पाइनीन तथा हाइड्रोकार्बन होते हैं। यह तेल कृमिरोधक है। बड़ी इलायची सीनिऑल तथा टर्पिनिऑल और बालछड़ बोर्निऑल को उत्पन्न करती है।

जो पदार्थ इस प्रकार उत्पन्न होते हैं वे २००-४००° सेल्सियस तापमात्र पर उड़ जाते हैं तथा वायु में मिलकर सुगन्धि पैदा करते हैं। यज्ञ के समय जो धुआँ और भाप बनता है वह इन पदार्थों को बहुत दूर तक फैला देता है। इस प्रकार इन पदार्थों को वायु में मिलने में सुविधा हो जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जलाने से किसी वस्तु का नाश नहीं होता, केवल रूप बदल जाता है। आहुति देने के पश्चात् भी

पदार्थों का उपयोगी भाग ज्यों-का-त्यों बना रहता है, वे पदार्थ केवल सूक्ष्म हो जाते हैं। इनका सूक्ष्म आकार इन्हें वायु में मिलने एवं फैलने में सुविधा प्रदान करता है। उड़ने वाले तेलों के परमाणुओं का व्यास लगभग 9×10^{-3} से 9×10^{-9} मिलीमीटर होता है। ये परमाणु श्वास के द्वारा रोगी के फेफड़ों में पहुँचकर क्षत को भर देते हैं।

इन पृष्ठों में कुछ रासायनिक परिवर्तनों की चर्चा की गई है, पर ये परिवर्तन तभी फलदायक हो सकेंगे जब धी और सामग्री थोड़ी-थोड़ी मात्रा में थोड़ी-थोड़ी देर के पश्चात् प्रज्वलित अग्नि पर डाले जाएंगे। यदि सभी द्रव्यों की आहुति एकदम, बिना किसी विधि के दे दी गई तो अग्नि भी बुझ जाएगी तथा क्रियाएँ पूर्ण न होने के कारण वाञ्छित गैसों उत्पन्न न हो सकेंगी। यदि सामग्री देर में डाली जाए तो गर्मी का उचित लाभ न उठाना जा सकेगा, अतः बिना विधि के किया गया अवैज्ञानिक कार्य यज्ञ नहीं कहलाएगा। ऋषि दयानन्द ने पूना में सातवें दिन का व्याख्यान देते हुए ठीक ही कहा था, “योग्य रीति से यथाविधि होम करना चाहिए। एकदम मनभर धी जला दिया वा चम्मच-चम्मच करके मनभर घृत को वर्षभर जलाते रहे तो भी होम नहीं होगा।” महर्षि के इन वचनों के वैज्ञानिक महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता।

इस असुविधा को दूर करने के लिए प्राचीन ऋषियों ने आहुति का परिमाण तथा इसके डालने का समय निश्चित किया है। ऋषिवर दयानन्द^{२०} ने भी आहुति के सामान्य परिणाम के विषय में लिखा है, “कम-से-कम छह मासाभर घृत व अन्य मोहनभोगादि जो कुछ सामग्री हो, अधिक-से-अधिक छटाँकभर की आहुति दें।” यह परिमाण साधारण यज्ञों के लिए है। बड़े यज्ञों में अधिक आहुति देने का विधान है। देव दयानन्द आगे लिखते हैं- “छह-छह मासे घृतादि एक-एक आहुति का परिमाण न्यून-से-न्यून चाहिए और जो इससे अधिक करे तो बहुत अच्छा।” प्रत्येक आहुति देने से पूर्व उस आहुति के लिए निश्चित किए मन्त्र का उच्चारण करने का विधान है। इससे हवन सामग्री अर्पित करने का समय व्यवस्थित हो जा है तथा क्रिया सुविधापूर्वक चलती रहती है। साथ ही वेद की रक्षा तथा समय का सदुपयोग भी हो जाता है। मन्त्रों से यज्ञ के प्रत्येक अङ्ग का साथ-

साथ ज्ञान होता जाता है, क्योंकि उस क्रिया से सम्बन्धित मन्त्र ही तत्-तत् क्रिया के अवसर पर उच्चारित किया जाता है। यही मन्त्रों का विनियोग कहलाता है। सारा कार्य बौझ न बनकर समय कितने ही नर-नारी केवल दर्शक के रूप में बैठे रहते हैं। उन्हें भी हवनीय गैसों से युक्त सुगन्धित वायु में सांस लेकर मित्र स्वास्थ्य की रक्षा करने का अवसर प्राप्त होता रहता है।

प्रकाश-संश्लेषण

यज्ञ में सूर्य की किरणों का बहुत महत्त्व है। महर्षि दयानन्द ने लिखा है, “सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र करने का समय है।” वैसे भी यज्ञवेदी खुला स्थान होता है, जहाँ प्रकाश सुविधा से पहुँच सके। सूर्य के प्रकाश को इतना महत्त्व देने का कारण यह है कि यज्ञ के समय उत्पन्न हुए पदार्थों में सूर्य के प्रकाश की विद्यमानता में कई प्रकार के रासायनिक परिवर्तन होते रहते हैं। कुछ ऐल्डिहाइड और एल्कोहॉल ऑक्सीकृत हो जाते हैं। हाइड्रोकार्बन तथा फीनोल का बहुलीकरण हो जाना संभव है। परावैगनी प्रकाश में कुछ कार्बन डाइऑक्साइड पानी के साथ मिलकर फार्मेल्लीहाइड भी बना लेती है (समीकरण १८)।

फार्मेल्लीहाइड अन्य कई परिवर्तनों के द्वारा भी बनता रहता है। उदाहरणार्थ- ऐसीटिक अम्ल, ग्लिसरॉल, ऐसीटोन आदि भी हवन से उत्पन्न होते हैं। धर और आत्माराम वायु और सूर्य के प्रकाश की विद्यमानता में इनका फार्मेल्लीहाइड में बदल जाना सम्भव मानते हैं (समीकरण ११, २०)। पाइरूविक अम्ल ऑक्सैलिक अम्ल, ग्लूकोस, फॉर्मिक अम्ल, प्रोपिऑनिक अम्ल, खॉड, स्टार्च, स्टिऐरिक अम्ल भी सूर्य के प्रकाश में थोड़ी मात्रा में फार्मेल्लीहाइड बनाते हैं। सम्भवतः ये पदार्थ सर्वप्रथम ऑक्सीकरण के कारण फार्मेल्लीहाइड में बदल जाते हैं।

सूर्य के प्रकाश का सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य प्रकाश-संश्लेषण है। हरे पौधों में क्लोरोफिल होता है। पौधे धूप की विद्यमानता में क्लोरोफिल की सहायता से कार्बन डाइऑक्साइड को कार्बोहाइड्रेट में बदल देते हैं। इस क्रिया को प्रकाश-संश्लेषण कहते हैं।

क्लोरोफिल के बिना यह परिवर्तन नहीं हो सकता। भारतीय शास्त्रकारों ने भी यज्ञवेदी

के चहुँ ओर हरी लताएँ तथा पौधे लगाने का विधान किया है। इससे जहाँ स्थान की शोभा और रमणीयता बढ़ती है, वहीं प्रकाश-संश्लेषण भी होता रहता है।

प्रकाश-संश्लेषण केवल धूप में ही सम्भव है। यही कारण है कि दिन की अपेक्षा रात्रि में वायु में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा १२ प्रतिशत बढ़ जाती है। यदि कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा वायु में ०.६ प्रतिशत हो तो पता नहीं चलता। १.४ प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड से सिरपीड़ा आदि होती है। वैसे सिरपीड़ा एवं मूर्च्छा आदि का कारण कार्बन डाइऑक्साइड नहीं, अपितु ऑक्सीजन का अभाव होता है। यदि ७.५ प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड हो तो वायु विषाक्त बन जाती है, अतः यज्ञ के लिए सूर्योदय के पश्चात् तथा सूर्यास्त से पूर्व का समय निश्चित करना वैज्ञानिक महत्त्व रखता है।

प्रकाश-संश्लेषण के लिए पानी की विद्यमानता भी आवश्यक है। यज्ञ के समय पानी कई रासायनिक परिवर्तनों से बनता रहता है। हव्य पदार्थों में भी पर्याप्त यात्र में पानी होता है। यही जल भाप बनकर उड़ जाता है तथा वायु में रहता है। इस प्रकार अग्निहोत्र प्रकाश-संश्लेषण की सारी शर्तें पूरा करता है।

यज्ञ के द्वारा उत्पन्न हुई कार्बन डाइऑक्साइड हानि नहीं पहुँचाती, अपितु पौधों के लिए भोजन देती है। पौधे कार्बन डाइऑक्साइड और ऑक्सीजन के बिना जीवित नहीं रह सकते। वनस्पति जगत् प्रतिवर्ष 60×90^{12} किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड को निज भोजन में परिवर्तित कर रहा है। भूमि पर पड़ने वाली सूर्य की शक्ति का 9×90^{14} भाग केवल इसी क्रिया में व्यय हो रहा है, अतः कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में किञ्चित् वृद्धि से अधिक प्रकाश-संश्लेषण होगा जिसका फसल पर सुखद प्रभाव पड़ेगा। मैक्समोव इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि “खाद की गर्म तह से आच्छादित पौधों की तेज वृद्धि केवल इस प्रकार उत्पन्न अधिक तापांश के कारण ही नहीं अपितु कार्बन डाइऑक्साइड की अधिक मात्रा के कारण भी होती है।”²² इसका प्रमाण एक वैज्ञानिक ने सन् १९०४ में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ाकर अधिक फसल उत्पन्न करके दिया है। ऐसा समझा जाता है कि चूने की भट्टियों

में काम करने वालों को कार्बन डाइऑक्साइड की विद्यमानता के कारण फेफड़ों का क्षयरोग ही होता। इसी आधार पर एक फ्रेंच डॉक्टर ने क्षयरोग की एक चिकित्सा निकाली थी। विधि इस प्रकार है कि कार्बन डाइऑक्साइड से युक्त वायु में कैल्सियम धूल पर शुष्क गर्मी का प्रयोग किया जाए। फिर इस वायु में रोगी लम्बे-लम्बे खाँस ले। यह प्रयोग इस डॉक्टर के द्वारा कई रोगियों पर एक-दो दिन में बारह-बारह बार किया गया। ऐसा करने से क्षय के चिह्न दूर होने शुरू हो गए तथा रोगियों का भार भी बढ़ने लगा।²³

सूर्य का प्रकाश मनुष्य के लिए वैसे भी लाभदायक है। इससे शरीर में विटामिन डी बनता है, जिससे हड्डियाँ पुष्ट होती हैं। उदय और अस्त होने वाले सूर्य की किरणें तो और भी अधिक गुणकारी होती हैं। अथर्ववेद (२।३२।१९) में कहा गया है-

उद्यन्नादित्यः क्रिमीहन्तु निम्रोचन्हन्तु रश्मिभिः।

ये अन्तः क्रिमयो गवि ॥

“उदय होता हुआ और अस्त होने वाला सूर्य अपनी किरणों से भूमि और शरीर में रहने वाले रोगजनक कीटों का नाश करता है।”

सूर्य का प्रकाश कृनाशक है। राबर्ट कौच ने सन् १८९० में अनेक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया कि क्षयरोग (फेफड़ों के क्षयरोग को छोड़कर) के कीटाणु इस प्रकाश में दस मिनट से अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। इसीलिए क्षयरोग से ग्रस्त व्यक्ति को धूप सेकनी चाहिए। सम्भवतः जनसाधारण में इसको यह कहकर मान्यता प्रदान की जाती है कि अँधेरे में क्षयरोग फूलता-फूलता है तथा प्रकाश में यह दुम दबाकर भाग जाता है। अतः यज्ञ के लिए सूर्योदय के पश्चात् तथा सूर्यास्त से पूर्व का समय ही ठीक है।

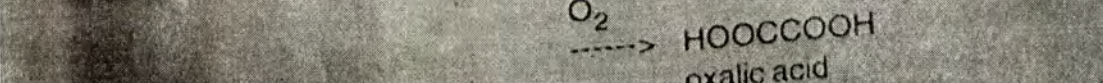
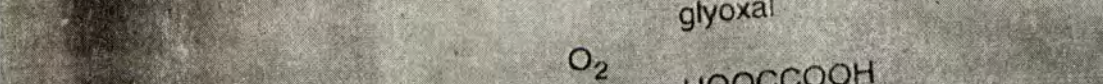
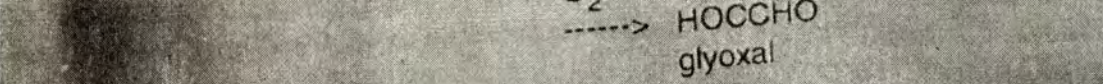
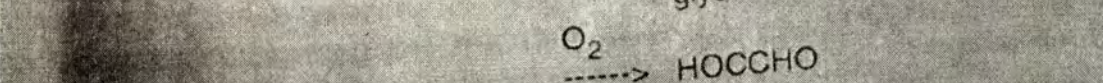
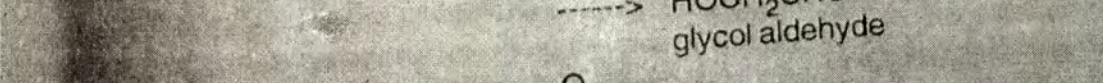
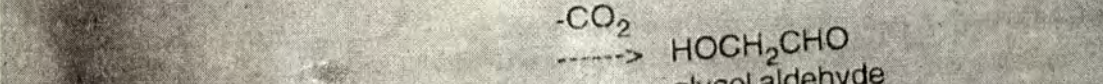
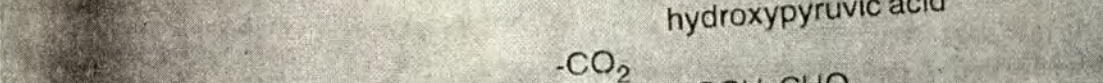
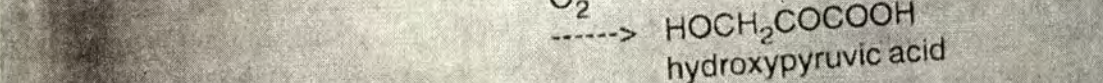
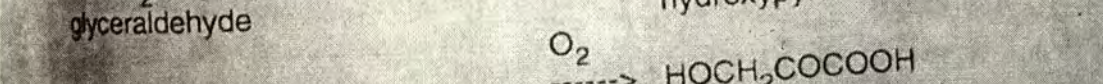
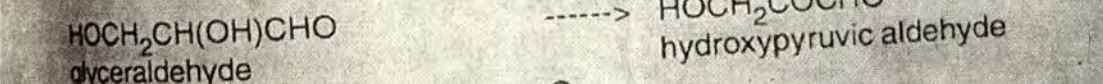
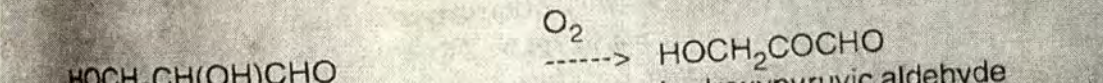
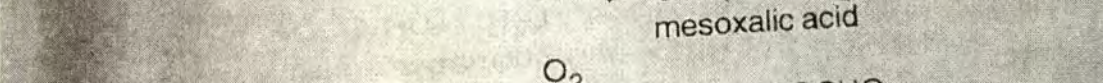
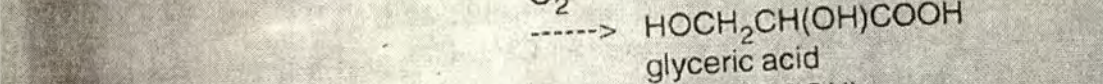
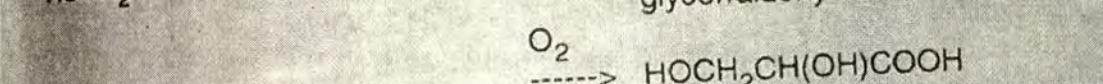
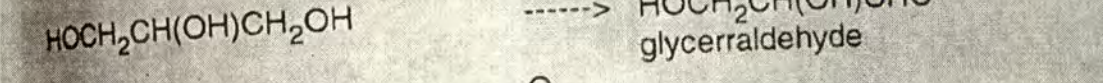
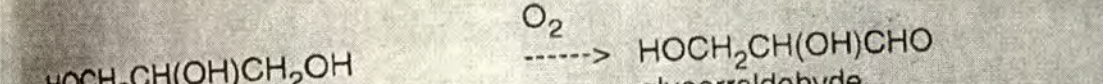
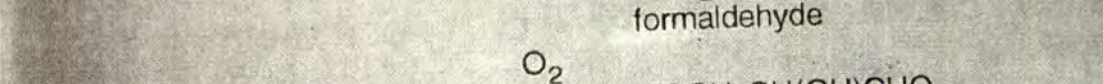
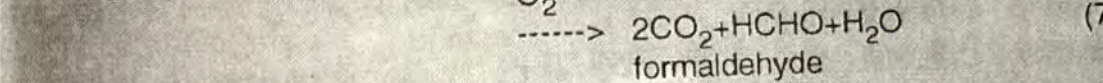
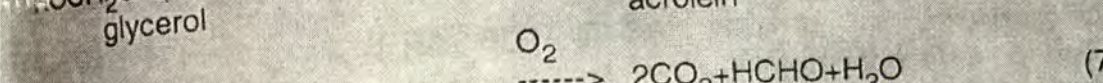
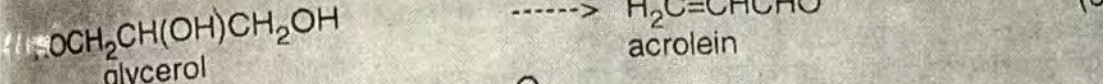
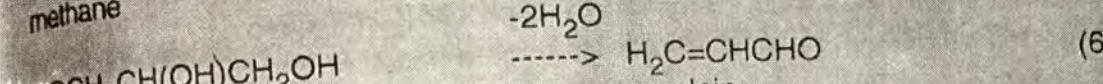
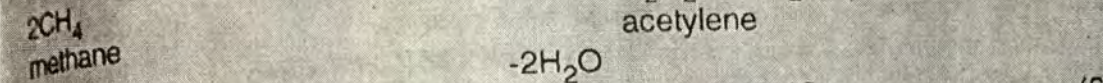
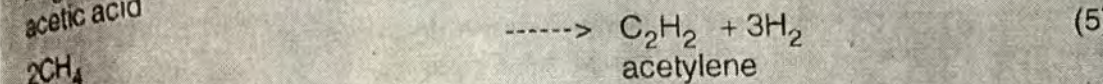
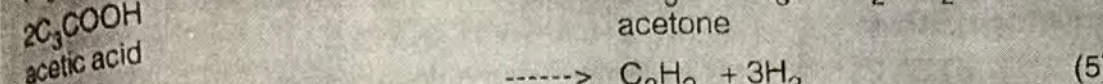
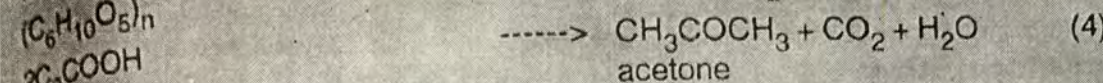
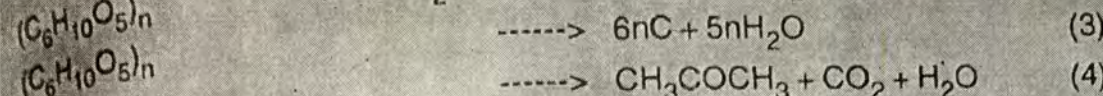
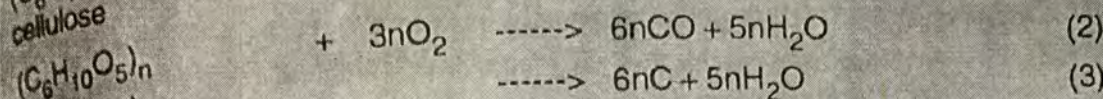
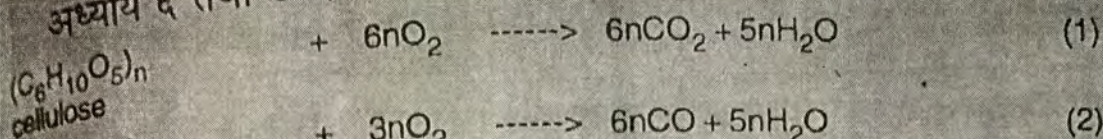
द्रष्टव्यः

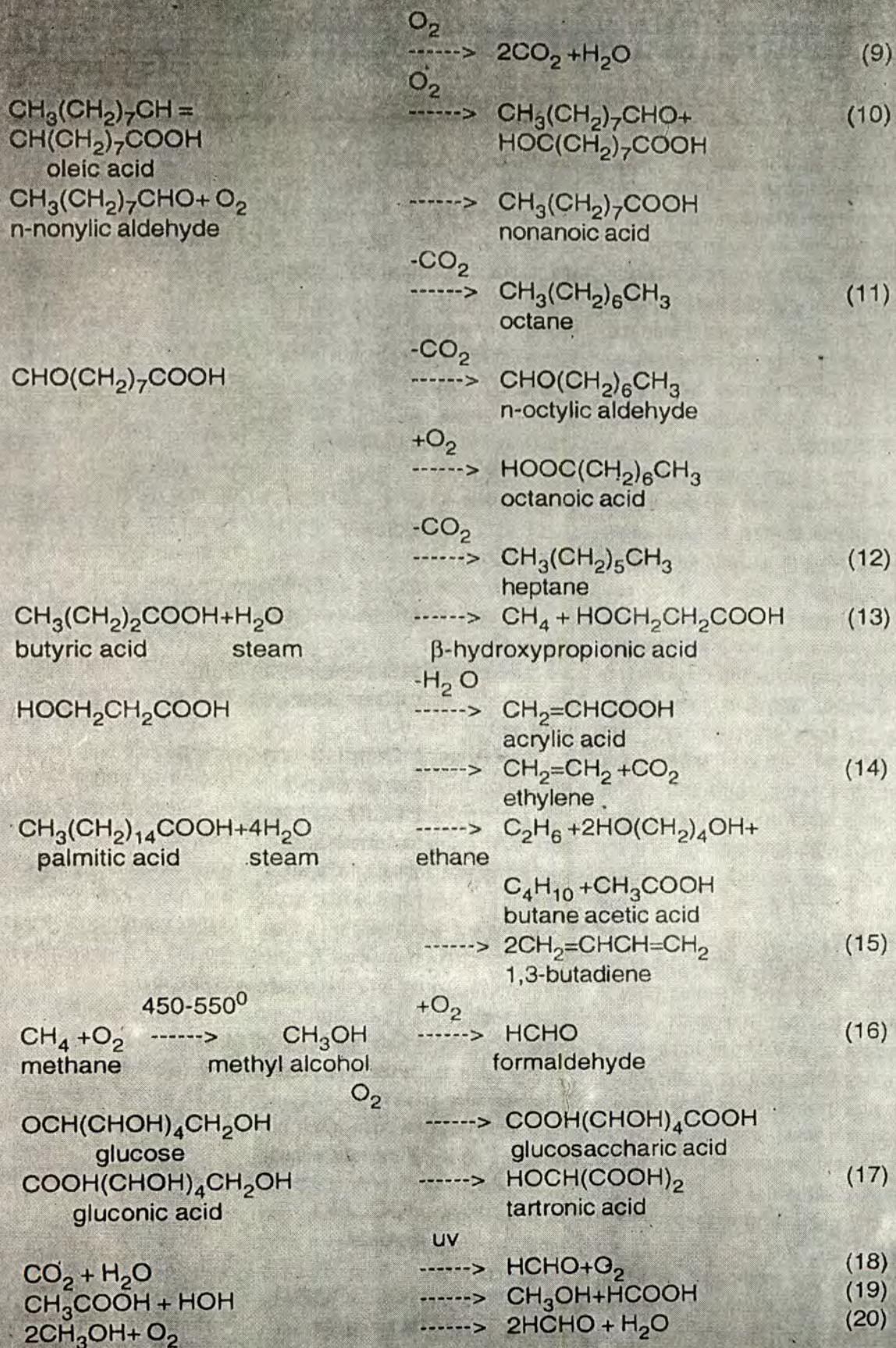
१. ऋषि दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास, तुलना: ऋषि दयानन्द सरस्वती के पूना प्रवचन (व्याख्यान सात)
२. स्वामी दयानन्द सरस्वती, मौलवी मुहम्मद कासम और पादरी स्काट आदि के मध्य चौदपुर मेले में २० मार्च, १८७७ को हुई चर्चा “सत्यधर्म विचार” शीर्षक से प्रकाशित पुस्तिका
३. "In all chemical and physical changes, the total mass of the system remains constant." or "Matter

can neither be created nor destroyed by any physical or chemical means though it may change its form."

४. ऋषि दयानन्द सरस्वती, यजुर्वेदभाष्य (१/८)
५. "At certain temperature and pressure, the rates of diffusion of gases are inversely proportional to the square roots of their densities."
६. ऋषि दयानन्द सरस्वती, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदविषयविचार
७. Hawley and Palmer, U.S. Department Agr. Bull., 129 (1914)
८. G. Bugge, 'Industrie der Helzdistillations Produkta.' Theeder Steinkoff, Dresden & Leipzig (1927)
९. Klason quoted in Henser, Cellulose Chemistry
१०. Satya Prakash, Agnihotra, The Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, Delhi (1937), pp. 130-31.
११. डॉक्टर फुन्दनलाल 'अग्निहोत्री', हवन यज्ञ द्वारा क्षयरोग की चिकित्सा (१९४६)
१२. I.L. Finar, Organic Chemistry, Longman, London (1973)
१३. T.S. Wheeler and E.W. Blair, J. Soc. Chem. Ind., 42, 421. (1923)
१४. Bone and Andrew, J. Chem. Soc., 87, 1232 (1905)
१५. G. Egloff and R.E. Schaad, Chem. Revs., 9, 91-141 (1929)
१६. Louise Kelley, Organic Chemistry, McGraw Hill, New York, (1957)
१७. R.N. Chopra, I.C. Chopra, K.L. Handa and L.D. Kapur, Indigenous Drugs of India, Dhur & Sons, Calcutta (1958), (क) p. 275, (ख) p. 126 (ग) p. 172 (घ) p. 202, (ङ) pp. 243, 628.
१८. J.F. Dastur, Medicinal Plants of India and Pakistan, D.B. Taraporewala & Co. Ltd., Bombay (1977)
१९. ऋषि दयानन्द सरस्वती, पूना-प्रवचन, व्याख्यान सात
२०. ऋषि दयानन्द सरस्वती, संस्कारविधि, सामान्यप्रकरण
२१. N.R. Dhar and Atma Ram, J. Chem. Soc., 10, 161, 287 (1938)
२२. N.A. Maximov, Plant Physiology, McGraw Hill, New York (1938)
२३. देवयज्ञ प्रदीपिका में “हिन्दू मैसेज” के “मैडिकल सम्प्लीमेंट” से उद्धृत

अध्याय ६ तथा ७ में सांकेतिक रासायनिक परिवर्तन नीचे दिए जाते हैं-





कृष्णन्तो विश्वमार्यम् - चुनौतियाँ एवं सुझाव

-नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

पूरे विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाने के क्रान्तदर्शी देव दयानन्द के स्वप्न को साकार करने का दायित्व दयानंदी परिवार के सदस्य कहने वाले आर्यों पर है। इस गुरुत्तर कार्य में हम कितने सफल हो पा रहे हैं इसके लिए हमारे समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं तथा इन चुनौतियों से निबटने के लिए हम कितने प्रयास कर पाने में सक्षम हैं यह एक चिंतन करने का विषय है। जिस प्रकार किसी रोग के इलाज से पूर्व डॉक्टर उसका ठीक प्रकार से आकलन करता है फिर उसके लिए आवश्यक दवा का प्रयोग करता है। आज 'कृष्णन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य को प्राप्त करने के रास्ते में आने वाली चुनौतियों को समझ कर उनका सामना करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा। इस पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

१) क्रान्तदर्श देव दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना एक आन्दोलन के रूप में की थी। एक ऐसा आन्दोलन जो समाज में व्याप्त सभी अन्धविश्वासों, पाखण्डों, कुरीतियों से मुक्ति दिलवाकर सबका समर्थन और विस्तार पाता था। उस समय नारी शिक्षा, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा कितनी सामाजिक बीमारियों से समाज को मुक्त करवाने का श्रेय आर्य समाज को जाता है।

परन्तु आज यह सभी दुराईयाँ नए-नए स्वरूपों में समाज में व्याप्त हैं। कन्या भ्रूण हत्या, नारी विमर्श के नाम पर नग्नता, बाल विवाह, बंधुआ मजदूरी, भ्रष्टाचार आदि कितनी बीमारियाँ समाज में अपने भयावह स्वरूप में विद्यमान हैं। क्या आर्य समाज ने कभी आन्दोलन के रूप में अग्रणी भूमिका निभाते हुए इनके विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद किया। हम शायद दूसरों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलनों के पिछलग्गू बनकर अपनी पहचान खोते रहे।

२) महर्षि देव दयानन्द ने धार्मिक पाखण्डों आडम्बरों और तथाकथित धर्म के ठेकेदारों का खुला पुरजोर विरोध पाखण्ड खण्डन द्वारा किया। चाहे उसके लिए उन्हें कितनी बार विष दिया गया, अपमान सहने पड़े। परन्तु आज आर्य समाजों में आने वाले आर्य विद्वानों को खंडनात्मक बात ना कहने की सलाह इस डर से देते हैं कि लोग नाराज हो जायेंगे।

आर्य सिद्धान्तों के मंडन के साथ-साथ पाखण्ड-खण्डन भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भोली-भाली जनता को भेड़ों की तरह मूंडकर स्वयं को ईश्वर वा ईश्वरीय अवतार घोषित कर चुके पाखण्डी बाबों का पोल खोल अभियान आर्य समाज को चलाना होगा। लोगों को पाखण्डी, ढोंगी बाबाओं से बचाकर हम उनका विश्वास अर्जित करके उनमें आर्य सिद्धान्तों का प्रचार कर सकते हैं। निर्मल बाबा, पाल दिनाकरन, रामपाल दास, राम-रहीम जैसे पाखंडियों के विरुद्ध आर्य समाज को आन्दोलन करना चाहिए। गंदगी की सफाई का अपना विशेष महत्त्व है।

३) महर्षि दयानन्द ने जन्म आधारित जाति व्यवस्था का विरोध करके सामाजिक समरसता का संदेश दिया और आर्य समाज के ओ३म् ध्वज तले सभी को एक सूत्र में बाँध दिया। आज की राजनैतिक व्यवस्था में सत्ता प्राप्ति के लिए राजनेताओं ने 'फूट डालो राज करो' की अंग्रेजी नीति पर चलते हुए समाज को जातियों के कबीलों में बाँट डाला है। राजनीति समाज को तोड़ती है परन्तु सच्चा वैदिक धर्म समाज को जोड़ता है। आर्य समाज को आर्य सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करके जातियों के बंधन को तोड़ना होगा और सभी को दयानंदी आर्य परिवार के सूत्र में पिरोना होगा।

४) समाज में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए तथाकथित अगड़ी जातियों के दबंग दलित वर्ग पर अत्याचार करके उन्हें दबाकर रखते हैं। वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में इस कुप्रथा को स्वीकार्यता मिली हुई है। जन्म आधारित जाति का विरोध करके दलितों, शोषितों पर हो रहे अत्याचारों का विरोध आर्य समाज को करना होगा। जाति ना पूछो साधु की जातिगत भावना से उपर उठकर विद्वानों का सम्मान करना होगा। स्वामी श्रद्धानन्द की भांति अछूतोद्धार का कार्य हाथ में लेकर सामाजिक समरसता को स्थापित करना होगा।

५) आर्य समाज को भवन में हवन के इर्द-गिर्द सिमटते देख अक्सर भविष्य की चिन्ता में डर लगता है। यज्ञ की व्यापक परिभाषा को समझकर यज्ञीय अर्थात् परोपकार

के कार्य करते हुए अपना जीवन यज्ञमय बनाकर आर्यों की अपने व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण पैदा करना होगा ताकि लोग आर्य सिद्धान्तों की ओर आकर्षित हों। पहले स्वयं आर्य बनें फिर दूसरों को आर्य बनने की प्रेरणा दें।

६) आर्य समाज के भवनों को हड़पने की वदैनियति से हर हाल में पद पर चिपके मठाधीशों से आर्य समाजों को मुक्त करवाना होगा ताकि नए युवा लोगों को काम करने का मौका मिल सके और अधिक से अधिक लोग आर्य समाज से जुड़ सकें। अन्कों आर्य समाजों में वर्षों से प्रधान पद पर कब्जा किए बैठे ऐसे लोग अपनी जोड़-तोड़ की राजनीति से आर्य प्रचार-प्रसार की हानि कर रहे हैं।

७) आर्य समाजों के भवन घस सुबह के हवन के बाद बंद हो जाते हैं। इनका अधिकतम उपयोग वेद प्रचार एवं अन्य सामाजिक कार्यों के लिए किया जाना चाहिए। इनमें योग कक्षाएँ हवन, आर्य कुमार सभायें, आर्य युवा संगठनों की शाखाएँ, धर्मार्थ औषधालय, सिलाई प्रशिक्षण इत्यादि कार्य निरन्तर नियमित रूप से चलाये जा सकते हैं।

८) आर्य संगठनों में फूट का राज रोग दीमक की भांति लग चुका है जिसके कारण समाज की दशा निरन्तर खोखली होती जा रही है। फूट के इस राज रोग का ईलाज आपातकालीन ढंग से करना होगा और इसके लिए शीर्ष आर्य संन्यासियों, विद्वानों को पहल करनी होगी।

९) आर्य कर्मकाण्डों में पुरोहितों को एकरूपता लाने की नितान्त आवश्यकता है इसके लिए धर्माय सभा को पहल करके सभी विद्वानों को एक निश्चित निर्णय पर पहुँचने के लिए प्रेरित करना पड़ेगा। सभी कर्मकांडों में आर्य पुरोहितों द्वारा संस्कारों में एकरूपता से आम जनता का विश्वास आर्य पद्धति पर बढ़ेगा।

१०) निःस्वार्थ भाव से आर्य सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने वाली दयानन्द के दीवानों की फ़ौज तैयार करनी होगी। इसके लिए पारिवारिक दायित्वों से निवृत्त हो चुके वानप्रस्थितियों, विरक्त हो चुके संन्यासियों के

शेष १४ पेज पर

सोवियत रूस में क्रांति का ऐसा हश्र क्यों हुआ?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

रूस में हुई साम्यवादी सोवियत क्रांति को पूरे १०० साल हो गए। इसे ७ नवंबर को मनाया जाता है लेकिन रूसी भाषा में इसे 'अक्ताब्रिस्काया रिवल्यूत्सी' याने अक्तूबर क्रांति कहते हैं। इस क्रांति को पिछले सौ साल की सबसे बड़ी घटना कहा जा सकता है। दुनिया के कई अन्य देशों में भी क्रांतियां हुईं, रूस से बड़े देश चीन में भी हुईं लेकिन सोवियत क्रांति विश्व इतिहास की एक बेजोड़ घटना थी। यह घटना १९१७ में घटी थी, जबकि पूरा यूरोप प्रथम महायुद्ध में उलझा हुआ था। यूरोप के पांचों साम्राज्य- रूस की जारशाही, आस्ट्रो-हंगेरियाई, जर्मन, तुर्क और ब्रिटिश साम्राज्य अंदर से हिल रहे थे। ऐसे में ब्लादिमीर इलिच लेनिन के नेतृत्व रूस में जो खूनी क्रांति हुई, वह वैसी नहीं थी, जैसे फौजी तख्ता-पलट हमारे पड़ोसी देशों में होते रहते हैं। वह विचार पर आधारित क्रांति थी। वह कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स के साम्यवादी विचारों पर आधारित थी। इस अर्थ में वह फ्रांस की राज्यक्रांति (१७८९) से भी अलग थी।

मार्क्सवादी दर्शन की व्याख्या करना यहां संभव नहीं है लेकिन जैसा कि मार्क्स ने अपने 'कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र' (१८४८) में कहा था, साम्यवादी क्रांति का लक्ष्य उत्पादन के साधनों पर विश्व के मजदूरों का अधिपत्य कायम करना था और पूंजीवाद की कब्र खोद देना था। एक नई समतामूलक संस्कृति को जन्म देना था। समाज को वर्गविहीन बनाना और विश्व विजय करना था। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मार्क्स ने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष और अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत प्रतिपादित किए और हिंसक क्रांति का समर्थन किया। मार्क्स के जीते-जी तो कुछ नहीं हुआ लेकिन उनके जाने के ३०-३५

साल बाद रोजा लक्सम्बर्ग, लियोन त्रहत्सकी और लेनिन जैसे नेताओं ने उनके विचार को आगे बढ़ाया और रूस में क्रांति कर दी।

इस क्रांति का असर विश्व-व्यापी हुआ। पूर्वी यूरोप के कई देश यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, हंगेरी, पोलैंड, पूर्वी जर्मनी आदि साम्यवादी हो गए। पश्चिम में क्यूबा और पूरब में चीन तक लाल हो गए। भारत, फ्रांस, इंडोनेशिया, ब्रिटेन, वियतनाम, अफगानिस्तान और एराक जैसे कई देशों के नेताओं पर लाल नहीं तो गुलाबी रंग तो चढ़ ही गया। पूंजीवाद की टक्कर में समाजवादी लहर सारी दुनिया में चमकने लगी। साम्यवादी क्रांति के नाम पर खून की नदियां बहीं। लगभग १० करोड़ लोग मारे गए। कई देशों के परंपरागत सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे चकनाचूर हो गए। लगभग ५० साल तक सारा विश्व शीतयुद्ध की चपेट में सिहरता रहा।

लेकिन साम्यवादी क्रांति के इस शताब्दि वर्ष में हमें यह सोचने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है कि यह क्रांति सिर्फ ७०-८० साल में ही दिवंगत क्यों हो गई? चीन अपने आप को आज भी साम्यवादी कहता है लेकिन सिर्फ कहने के लिए! चीन की दुकान पर बोर्ड साम्यवाद का लगा है लेकिन माल अब वहां पूंजीवाद का विक्रता है। माओ के बाद तंग श्याओ फिंग और शी चिन फिंग ने चीन की शक्ल ही बदल दी। उन्होंने साम्यवाद के मुंह में पूंजीवाद के डेंचर लगा दिए हैं।

मार्क्स और लेनिन की क्रांति कुछ ही देशों में सिमटकर क्यों रह गई? यह विश्व धर्म क्यों नहीं बन पाई? जिन देशों में भी यह हुई, वहां से भी इसे विदा क्यों होना पड़ा? इसका पहला कारण, जो मुझे समझ पड़ता है, वह यह

है कि यह क्रांति मानव स्वभाव के विपरीत थी। हिंसा से जार या च्यांग काई शेक का तख्ता पलट दिया गया, यह तो ठीक है लेकिन आम जनता पर भी उसी हिंसा को थोपे रखना बिल्कुल अव्यवहारिक सिद्ध हुआ। लाखों-करोड़ों लोग तानाशाही फरमानों के आगे मजबूरी में सिर टेकते रहे लेकिन उन्होंने साम्यवादी व्यवस्था को दिल से कभी स्वीकार नहीं किया। मानव जीवन में राज्य की भूमिका काफी कम और परिवार व समाज की भूमिका काफी ज्यादा होती है लेकिन राज्य को पूर्णरूपेण खत्म करने का साम्राज्य महासचिव की जेब में रहती है। उसकी उंगलियों पर सबको नाचना पड़ता है। पार्टी के अधिकारियों को मैंने रूस में बड़े-बड़े धन्ना-सेठों की तरह ठाट-बाट से रहते हुए देखा है। उनके बंगले (दाचा) और उनकी कारों (स्कदा) को मैंने सोने से मढ़े हुए देखा है। वे अहंकार में डूबे हुए और आम जनता के सुख-दुख से कटे हुए लोग होते हैं। उनके भ्रष्टाचार पर कोई अंकुश नहीं होता। इन देशों की संसदे और विधानसभाएं रबर के ठप्पे से ज्यादा कुछ नहीं होती। दस दिन के सत्र में सैकड़ों कानूनों के लिए ये लोग हाथ उठा-उठाकर स्वीकृति देते जाते हैं। विपक्ष के नाम पर शून्य होता है। लेनिन और स्तालिन के पोलितब्यूरो के ज्यादातर सदस्यों की हत्या हो गई या वे जेलों में सड़ते रहे। लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों, विद्वानों को पार्टी नेताओं की तारीफ में कसीदे काढ़ने के अलावा क्या काम रहता है। इसीलिए जब सोवियत व्यवस्था के खिलाफ बगावत हुई तो रूसी लोगों ने राहत की सांस ली। मैंने ख्रुश्चौफ और गोर्बाचौफ दोनों का रूस अपनी आखों से देखा है। कम्युनिस्ट पार्टी के कमजोर होते ही रूस भी टुकड़े-टुकड़े हो गया।

इसमें शक नहीं कि रुस में जारशाही, चीन में च्यांग कोई शेक और क्यूबा में बतिस्ता के खात्मे के बाद दबे-पिसे, वंचित, शोषित और पीड़ित लोगों ने राहत की सांस ली थी और उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी थी लेकिन उसकी तुलना में पूंजीवादी देशों के इन्हीं वर्गों की स्थिति बेहतर हो गई थी। इसलिए मार्क्स की 'सर्वहारा' क्रांति की जड़े जमीन ही नहीं। संसार के सर्वहारा तो एक क्या होते, किसी एक देश के सर्वहारा ने भी पूंजीवादी व्यवस्था का चक्का जाम नहीं किया। साम्यवादी क्रांति के दम तोड़ने का तीसरा कारण यह था।

मार्क्सवादी क्रांति के परवान नहीं चढ़ने का चौथा कारण यह भी था कि दुनिया में खेमेबाजी शुरू हो गई। शीतयुद्ध छिड़ गया। एक नाटो-समूह बन गया और दूसरा वारसा-समूह। एक का नेता अमेरिका और दूसरे का रुस ! रुस नशीतयुद्ध में अपनी शक्ति का बड़ा हिस्सा गवां दिया। और फिर चीन ने भी अपनी अलग राह पकड़ ली। यूगोस्लाविया और चेकोस्लावाकिया में भी बगावत हो गई। गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों ने अपना अलग रास्ता पकड़ लिया। साम्यवादी सपना लुट-पिटकर रह गया।

रुस, चीन और क्यूबा की अपनी मजबूरियों के कारण वहां की क्रांतियां विफल हुईं लेकिन भारत, पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान जैसे देशों में कम्युनिस्टों का क्या हाल है ? इन देशों में कुछ दशकों पहले तक कम्युनिस्टों ने अपनी कुछ सरकारें बनाईं, लोकतांत्रिक और तख्ता-पलट तरीकों से लेकिन अब तो हाल यह है कि वे आखिरी सांसे गिन रही हैं। वे सच्चे मार्क्सवादी अर्थों में कम्युनिस्ट कभी रही ही नहीं। वे अपने देश की स्थानीय परिस्थितियों के मुताबिक ढल ही नहीं सकीं। न वे इधर की रहीं और न ही उधर की! जो भी हो, विफल होने के बावजूद इतिहास में मार्क्सवाद और रुसी क्रांति का स्थान अप्रतिम रहेगा, क्योंकि उन्होंने मानव जाति को अनेक नए सपनों और संभावनाओं से ओत प्रोत किया है

पेज १२ का शेष
साथ-साथ समर्पित युवाओं को आगे आना होगा। इसके लिए आर्य संगठनों को एकजुट होकर प्रयास करना पड़ेगा।

११) आर्य विद्वानों, संन्यासियों, प्रचारकों, युवा संगठनों के अधिकारियों का पूरा मान सम्मान करना हम सभी आर्य जनों का दायित्व बनता है। बड़े-बड़े भवन और हवन से आर्य जनता से एकत्रित धन को केवल बैंकों में रखकर उसके सूद से खर्च चलाना और फिर उन भवनों तथा एकत्रित कोष का झगड़े का कारण बनने से कहीं अच्छा है इस धन का सदुपयोग आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए किया जाये।

१२) जहाँ एक ओर आर्य विद्वानों का सम्मान सत्कार करना आर्यजनों का कर्तव्य है वहीं आर्य पुरोहितों को भी दक्षिणानन्द बनने की प्रवृत्ति से बचना होगा। इसके लिए आर्य समाजों व संगठनों का दायित्व बनता है कि वह अपने विद्वानों को धन की कमी न होने दें। आर्य विद्वान दीपक में जल रही बाती के समान हैं हमें उसमें तेल की कमी से जलकर बाती को नष्ट होने से बचना होगा। आर्य विद्वानों को परिवार के दायित्वों से निश्चित होकर प्रचार-प्रसार के कार्य को करने का मौका देना होगा।

१३) किसी भी समाज में विद्वान, प्रचारकों का अभाव उसके भविष्य के लिए घातक होता है। विद्वानों, भजनोपदेशकों के निर्माण के लिए अधिक से अधिक उपदेशक विद्यालय, गुरुकुलों आदि का संचालन अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए डी.ए.वी. द्वारा संचालित दयानन्द ब्रह्म विद्यालय पूर्व में अच्छे आर्य विद्वानों की उद्गम स्थली रहा है। आर्य समाज सेवा सदन द्वारा निर्माणधीन उपदेशक विद्यालय की योजना भी एक अच्छी योजना है। अन्य धर्मों की पूरी जानकारी भी अपने आर्य सिद्धान्तों के मंडन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शास्त्रार्थ के लिए विश्व प्रसिद्ध आर्य समाज में वर्तमान समय में यह कमी काफी अखरती है। संस्कृत के साथ-साथ अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी पर समान अधिकार रखने वाले विद्वानों की सख्त आवश्यकता है। इसके लिए डी. ए. वी. शिक्षण संस्थानों को आगे आना होगा।

१४) युवाओं को आर्य बनाने के उद्देश्य से सभी युवा आर्य संगठनों को आपसी मतभेद समाप्त कर एक कार्य योजना बनानी होगी। केवल गर्मियों की छुट्टियों तक सीमित हो चुके

आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविरों को वर्ष भर चलाना नए-नए जुड़े युवा साथियों को लगातार प्रोत्साहित करना और एक युवा साथियों को लगातार प्रोत्साहित करना और एक युवा शक्ति का निर्माण करना आज समय की आवश्यकता है। इसके लिए युवा संगठनों को धन की कमी आड़े ना आये इस बात को आर्य दानवीरों, भामाशाहों को सुनिश्चित करना होगा।

१५) जहाँ एक ओर युवाओं को प्रोत्साहित करके सहयोग देना आर्य नेताओं के लिए आवश्यक है वहीं आर्य नेताओं का सम्मान करना युवाओं का दायित्व है। युवा शक्ति उस पहाड़ी नदी की भांति ऊर्जा समेटे हुए है जिसकी ऊर्जा के प्रयोग के लिए अनुभव के बाँध की आवश्यकता है। यदि युवा शक्ति को ठीक ढंग से संचय करके प्रयोग करें तो विकास में सहायक होगी अन्यथा यह प्रलयकारी बाढ़ लाकर विनाशकारी भी सिद्ध हो सकती है।

१६) सरकारी शिक्षा सत्र के उपरान्त देश में सबसे बड़े शिक्षातंत्र के रूप में स्थापित हो चुके डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं को भी बचपन में ही बच्चों में आर्य सिद्धान्तों के संस्कार डालने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को बड़ी ईमानदारी के साथ निभाना होगा। इसके लिए आर्य युवा समाज को सुदृढ़ करना डी. ए. वी. के पचार्यों, शिक्षकों को आर्य सिद्धान्तों की पूरी जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। डी. ए. वी. के कितने विद्वान, प्राचार्यों ने अपने समय में त्यागपूर्ण ढंग से आर्य प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में तो पूनम सूरी जी के नेतृत्व में डी. ए. वी. आन्दोलन से आर्य समाज की अपेक्षाएं बहुत बढ़ गई हैं।

१७) बच्चे कच्ची मिट्टी के समान होते हैं बचपन में सीखी बातें पूरे जीवन साथ रहती हैं। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज एवं आर्य शिक्षण संस्थान में आर्य कुमार सभा का संचालन अत्यन्त आवश्यक है।

१८) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने परोपकार को आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बतलाया है। आदिवासी क्षेत्रों, गरीब बस्तियों आदि में सेवा प्रकल्प खोलना जिसमें धर्मार्थ औपधालय, सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र आदि अन्य स्वरोजगार के साधन देकर हम उन गरीब वंचितों को अपने साथ जोड़ सकते हैं। सामूहिक विवाह आयोजन, रक्तदान शिविरों, नेत्रदान अभियान जैसे सामाजिक कार्यों का भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अच्छा प्रभाव पड़ता है।

पाखण्ड और इसका उन्मूलन

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

प्राचीन काल से ही मानव जीवन में श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, गुरुडम, चमत्कार और धर्मभीरुता का इतना अधिक हस्तक्षेप रहा है कि कथा-प्रवचन, सत्यसंग, तीर्थाटन, श्रद्धा, दान-पुण्य, ज्योतिष, यज्ञ-बालि, जन्म-पत्री, मन्त्र-पाठ, मूर्तिपूजा, व्रतोपवास, झाड़-फूंक, तन्त्र-क्रियाओं से लम्पट, धूर्त, धोखेबाज लोगों ने जन-साधारण का जम कर आर्थिक व धार्मिक शोषण किया है। विज्ञान और तकनीक, तुलनात्मक अध्ययन, तर्क और कसौटी के इस युग में भी यह शोषण यथावत जारी है। आज भी धर्म के नाम पर अस्पृश्यता जीवित है, बाल-विवाह प्रथा जीवित है, सती-प्रथा महिमा-मण्डित है और देवदासियों के नाम पर नारी का दैहिक शोषण जारी है।

भारतीय पुनर्जागरण के अनेक मसीहाओं ने जिनमें राजा राममोहन राय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, अबू केशवचन्द्र सेन, मदनमोहन विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, महादेव गोविन्द रानडे, ज्योतिबा फुल्ले और महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम गौरव से स्मरण किया जाता है। उन्होंने धर्म के नाम पर फैले इस समूचे पाखण्ड की न केवल नये सिरे से व्याख्या की बल्कि ऐसी वेकल्पिक व्यवस्था भी प्रस्तुत की जिसकी पुष्टि वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, स्मृतियों, दर्श-शास्त्रों से भी होती थी। विशेषकर महर्षि दयानन्द का इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी योगदान रहा है। जिन वेदों के बारे में प्रचलित धारणा थी कि उन्हें तो अहिरावण पाताल ले गया था उन वेदों को स्वामी दयानन्द ने जर्मनी से मंगवा कर भारत में प्रकाशित किया। स्वामी दयानन्द परम आस्तिक, योगात्मा, अध्यात्मवादी, महान् तार्किक और मानवतावादी दिव्य आत्मा थे। उन्होंने वेदों का तलस्पर्शी आलोड़न कर अपने निष्कर्ष सत्यार्थप्रकाश में शब्द-निबद्ध किये। संस्कार-विधि में मुख्यतः सोलह संस्कारों का प्रतिपादन कर जन-साधारण में

धर्म-प्रवृत्ति जगाई। श्रद्धा और विश्वास को उन्होंने तर्क एवं वेद-आधारित बनाया। भक्ति को योग व अध्यात्म से जोड़ा, गुरु घंटालों के स्थान पर उन्होंने तर्क को ऋषि माना, दान सुपात्रों को देने की व्यवस्था की, धर्मभीरुता के स्थान पर धर्म-चिन्तन को प्रतिष्ठित किया, फलित ज्योतिष के स्थान पर गणित ज्योतिष को वरीयता प्रदान की, तीर्थाटन-मूर्ति पूजा, झाड़फूँक आदि को पाखण्ड घोषित किया, अवतारवाद के स्थान पर निराकारवाद की अवधारणा को प्रचलित किया। उन्होंने जन्म-पत्री को मरण-पत्री की संज्ञा दी। दैनिक जीवन को धार्मिक व आध्यात्मिक बनाने के लिए उन्होंने महामुनि पातंजलि के अष्टांग योग मार्ग का प्रतिपादन किया, पंच महायज्ञों को अपनाने पर बल दिया, पुरुषार्थ चतुष्टय के अनुसार जीवन व्यतीत करने का आग्रह किया।

महर्षि दयानन्द के युगान्तरकारी व्यक्तित्व और कृतित्व ने धार्मिक क्षेत्र में एक ऐसी समग्र क्रान्ति का अधिष्ठान किया कि उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं के कारण सभी समकालीन सुधारवादी आन्दोलनों को निस्तेज-सा कर दिया। कारण, आर्य समाज ने सत्य का आलम्बन करते हुए न तो किसी की लिहाज की और न किसी का दबाव माना। आर्य समाज की प्रथम पीढ़ी ने धर्म को अपने जीवन में इस योग्यता, परिपक्वता, निष्ठा व सक्रियता से अपनाया कि उनकी छवि अलग ही दिखाई देने लगी। आर्य समाज ने विपुल साहित्य का प्रकाशन कर, गाँव-गाँव प्रचार कर, आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर, सात-सात दिन के वार्षिक उत्सवों का व्यवस्था कर जिसमें प्रभातफेरी निकालने का प्रबन्ध भी होता था, शास्त्रार्थों की परम्परा विकसित कर एक ऐसा प्रचण्ड वातावरण तैयार कर दिया था कि हर व्यक्ति देख कर दंग रह जाता था। डी.ए.वी. संस्थाओं और गुरुकुलों से तैयार पीढ़ी ने तो इस वातावरण

को और अधिक अग्रणी एवं प्रभावशाली बनाने में बड़ा भारी योगदान दिया। जब कोई आर्य समाजी बनता था तो परिवार और बिरादरी में महलका मच जाता था, उसका बहिष्कार होने लगता था। आर्य समाज का सबसे बड़ा प्रहार अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, अवतारवाद पर हुआ, फलित ज्योतिष व झाड़-फूँक पर हुआ। बाल-विवाह, सती प्रथा विधवा विवाह निषेध और दहेज प्रथा पर हुआ। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने अपनी इस नई विचारधारा को वेदों से जोड़ा जो धर्म का मूल था। उसने अपनी इस कसौटी पर हिन्दू धर्म को ही नहीं जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, इस्लाम व इसाईयत को भी परखने का सफल प्रयास किया। सभी परम्परावादी धर्मों से आर्य समाज ने टक्कर लेकर समझाया धर्म का आधार वेद है और वेद की ओर ही सबको लौटना होगा।

महर्षि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने यम-नियम पर आधारित जीवन को श्रेष्ठ मानते हुए जिस जीवन शैली का निर्माण किया उसमें नशाखोरी, शराबखोरी, धूम्रपान, भांग, चरस, गांजा आदि के लिए कोई स्थान नहीं था, अनाचार, भ्रष्टाचार, के लिए कोई स्थान नहीं था, फैशन परस्ती सिनेमाखोरी, ताशबाजी, और विलासित के लिए कोई स्थान नहीं था। आर्य समाज ने स्वदेशी का नारा देकर विदेशी वस्तुओं के प्रयोग का बहिष्कार किया और खादी का प्रचार किया जिससे उन लाखों जुलाहों को काम मिला जिन्हें लंकाशायर के कपड़ा मिलों ने बेकार कर दिया था। स्वराज्य, स्वाधीनता का समाघोष लगा कर आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन की हर धारा में अपना योगदान दिया। देश में ही नहीं विदेशी भूमि पर जाकर भी उसने स्वाधीनता का संघर्ष शुरू किया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रयास तो महर्षि दयानन्द के समय से ही शुरू हो चुके थे।

वैदिक धर्म के प्राण

सत्य + न्याय + दया + अहिंसा + ईश्वरभक्ति (अन्य मतों से तुलनात्मक सत्य)

-ले० पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

धर्मों का आदि स्रोत वेद है, वेदों की शिक्षा मानव मात्र के लिए ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं। ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया, और उसके उपभोग के लिए वेदों का संविधान भी दिया है जो प्राणीमात्र के कल्याण के लिये भिन्न-भिन्न पदार्थों के गुण कर्म स्वभाव आदि में अनन्त काल तक अर्थात् सर्वकाल में एक समान रहते हैं। उन पदार्थों को हम सृष्टि कर्म विज्ञान कहते हैं। जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल, वनस्पति, भूगोल, आदि तथा प्राणियों में भिन्न-भिन्न शरीर और उनकी इन्द्रियां जो जन्म जन्मान्तरों तक एक समान रहती हैं। इस नित्य कर्म विज्ञान को हम सृष्टि क्रम, धर्म कहते हैं, और वहीं वास्तविक धर्म है। इसीलिए मनुष्य मात्र का वैदिक धर्म है।

धर्मो एव हतो हन्ति धर्मो रक्षितः रक्षितः

अर्थात्-जो मनुष्य ईश्वरीय धर्म की उपेक्षा करता है, धर्म उसका ही नाश कर देता है, जो ईश्वरीय धर्म का पालन करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। मानवीय जगत में प्रत्येक पदार्थों को उसके गुण कर्मानुसार मानना, और सम्पूर्ण प्राणियों के साथ उसी के अनुकूल व्यवहार करना, अपने जीवन में, सत्य व्यवहार, और सृष्टि कर्मानुसार प्रत्येक कृत्य मानना व करना, तथा जैसे ईश्वर प्राणी मात्र के लिये उपकार करता है वैसे ही अपने आप भी करना, वास्तविक धर्म कहाता है।

मानव समाज ने अपने स्वार्थ के लिये सम्प्रदायों मतों का निर्माण करके उस मत को धर्म का नाम देकर मनुष्य मात्र को स्वार्थी व सृष्टि क्रम विरुद्ध धर्मों में उलझा दिया है। आज मानव जगत विज्ञान में सर्वाधिक उन्नति कर रहा है। किन्तु मानवीय धार्मिक व्यवहारों के पालन में दिनों-दिन पतन होता जा रहा है। विना ईश्वरीय धर्म के केवल विज्ञान की उन्नति विनाश का कारण बनता है।

यदि संसार के सारे मत मतान्तर ईश्वरीय धर्म सृष्टि क्रम धर्म को मुक्त कंठ से स्वीकार कर लेंगे तो सम्पूर्ण विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। उपयुक्त धर्म प्राण जो व्यक्त

किये हैं, यदि उसमें एक सिद्धान्त भी निकाल दिया जाए तो वह धर्म नहीं रहता है। उक्त सिद्धान्त ही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। आइए इन सिद्धान्तों गुणों पर विचार करते हैं।

धर्म का प्रथम सिद्धान्त-सत्य

सत्य के अनेक भेद हैं। परन्तु जो पदार्थ जैसा दीखता है उसको वैसा ही मानना, जानना, कहना, सत्य की सामान्य परिभाषा है। क्योंकि भाव का कभी अभाव और अभाव का कभी भाव होती ही नहीं है। त्रिकालातीत को सत्य कहते हैं अर्थात् जो त्रिकाल की चपेट में न आये उसे सत्य कहते हैं। असत्य से सत्य और सत्य से ऋत सत्य महान है, जिसके बल पर सब कुछ टिका है। ऋत सत्य को समझना अनिवार्य है। क्योंकि असत्य कल्पित, सत्य संकल्पित और ऋत सत्य स्वाभाविक है। असत्य के असुर, सत्य के आश्रित मनुष्य और ऋत सत्य के आश्रित देवता रहते हैं। स्वाभाविक सत्य सदैव सत्य ही रहता है। सत्य को कभी दबाया नहीं जा सकता है सत्य से सुगम कोई मार्ग नहीं है। वह वेद का उपदेश है।

इसलिए वैदिक धर्म ईश्वर को निराकार मानता है। मूर्ति पूजा का निषेध व काल्पनिक देवी देवीओं की पूजा, भूतप्रेत, जादू टोना, फलित ज्योतिष, पशुबलि, मृतक का श्राद्ध, जाति पाति, छुआछूत को नहीं मानता इनका वेदों में और ईश्वरीय सृष्टिक्रम में कोई संकेत नहीं है।

मत मतान्तर-अवतारवाद, मूर्तिपूजा, देवी देवताओं की पूजा, फलित ज्योतिष, जाति पाति, ग्रहों का लगना, अनेक काल्पनिक मान्यताओं को मानते हैं इसलिए यह सभी सत्य से बहुत दूर है।

धर्म का दूसरा सिद्धान्त न्याय

महर्षि दयानन्द जी न्याय की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि जो सदा विचार कर असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करें, अन्यायकारियों को हटावें, और न्यायकारियों को बढ़ावे, अपने आत्मा के समान सब का

सुख चाहे उसे न्यायकारी मानता हूँ।

वैदिक, धर्म को छोड़ कर अन्य मतावलम्बी निष्पक्ष न्याय, अर्थात् जैसे को जैसा कहने में हिचकते हैं, इसलिए वह भी धर्म का अधूरा पन कहा जायेगा। जबकि कानून सत्य न्याय की दुहाई देता है।

धर्म का तीसरा सिद्धान्त दया

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि दया और न्याय का नाम मात्र ही भेद है। क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से। दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करने से घृष्टकर दुःखों को प्राप्त न हो वही दया कहाती है। यह दण्ड और न्याय व्यवस्था में लागू होता है किन्तु मानवीय सामाजिक, धार्मिक व्यवहारिक जगत में मनुष्य अपने सुकर्म व दुष्कर्म से ही दया का विश्लेषण करता है। प्राणी मात्र पर दया करना, निरीह जीव जन्तु की हत्या न करना, असहाय की सहायता करना, रोगी की सेवा करना, धृणा न करना, आपस में स्नेह से वर्तना, और जैसा मैं अपने लिये चाहता हूँ वैसा ही दूसरों से व्यवहार करना। सदैव सात्विक वृत्ति का पालन करना, दया का लक्षण हो सकता है। सत्य धर्म वही है जहां प्राणी मात्र पर दया की जाती हो।

धर्म का चतुर्थ सिद्धान्त अहिंसा

मन वचन कर्म द्वारा किसी को हानि न पहुंचाना, और किसी के प्रति द्रोह का भाव न रखना, ही अहिंसा है। सत्य, असत्य, चोरी न करना ब्रह्मचार्य और अद्रोह अहिंसा के सहायक है। अहिंसा साधना करने में स्वार्थ त्याग की आवश्यकता है जिस मत सम्प्रदाय में हिंसा होती है, वह धर्म का मत नहीं कहा जा सकता है।

धर्म का पंचम सिद्धान्त सत्य ईश्वर भक्ति है

महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के दूसरे नियम में सत्य ईश्वर की व्याख्या की है।

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार,

सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

मानव जगत में सम्पूर्ण विवाद, द्वेष, पाप, उग्रवाद, अलगाव, अज्ञानता, शोषणवृत्ति, हत्याएँ, लूट-पाट, अन्धविश्वास आदि ईश्वरीय स्वरूप को न जानने, व न मानने के कारण हो रही है। अपने-अपने मतानुसार अपनी मान्यता को ही सत्य मानना, तथा ईश्वरीय व्यवस्था, सृष्टिक्रम विज्ञान की उपेक्षा से ही आज सत्य, धर्म का पतन हो रहा है। स्पष्ट है वैदिक धर्म के अतिरिक्त प्रत्येक मतों में उक्त किसी न किसी सिद्धान्त की कमी है। विचार कीजिये।

धर्म निरपेक्ष कानून या विचार, क्या, मानव को शान्ति दे रहे है।

समानो मन्त्रः समिति समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्

समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषां जुहोमि

अर्थात् हो विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो।

ज्ञान देता हूँ, बराबर भोग्य पा सब नेक हों

महाभारत काल के बाद वैदिक संस्कृति व संस्कारों का युग समाप्त हो गया था और अवसरवादी वेद विहीन चतुर लोगों ने अपने मतों की दुकाने खड़ी कर दी। और विवेक हीन व अदूरदर्शी राजनेताओं ने इन मतों को वोट बैंक के लिए हवा देकर धर्म निरपेक्ष कानून बना दिया जिसका परिणाम वर्तमान में दीख रहा है फलस्वरूप भारत का बड़े से बड़ा नागरिक भी जड़ चेतन भेद का न समझ कर जड़ को शीश झुकाता है। अन्यो की तो बात है क्या है।

मुझे लगता है कि जड़ पूजा धर्म निरपेक्ष नारा व सामाजिक कुरीतियां इस नारा व सामाजिक कुरीतियां इस सृष्टि को समाप्त होने प्रलय तक समाप्त नहीं होने वाले है।

वैदिक धर्म की आवाज नक्कार खाने में तूती की आवाज हो रही है। फिर भी हमें आस नहीं छोड़नी चाहिए और प्रत्येक चिन्तनशील मनीषी को ईश्वर वाणी वैदिक धर्म को सापेक्ष-सार्वभौम-सर्व जानना व मनवाना है सत्य धर्म है।

पेज १५ का शेष

आजादी मिलने पर भारत सरकार से यह आशा रखी गई थी कि आर्य समाज की प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी सुधार योजना को राष्ट्रीय जीवन में मूर्तिमंत किया जायेगा विशेषतः गो-हत्या और नशाखोरी का कलंक जो जरूर मिटा दिया जायेगा तथा पाखण्ड और अंधविश्वास के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष छेड़ा जा सकेगा। लेकिन लोकतन्त्र के नाम पर सच व झूठ सब स्वीकार कर लिया गया। गो हत्या व नशाखोरी उन्मूलन का दायित्व प्रांतीय सरकारों को सौंप कर केन्द्र ने पल्ला झाड़ लिया। आज तो टी.वी. चैनलों पर वह सारा पाखण्ड परोसा जा रहा है जिसका आर्य समाज ने विरोध किया था। इसके साथ-साथ पाखण्ड को आकर्षक शैली में महिमा-मण्डित करने की होड़ भी लग चुकी है। गुरुडम, फलित ज्योतिष, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थाटन सभी का प्रचार टी.वी. पर हो रहा है। नतीजा यह निकला है कि हरिद्वार में जहाँ हजारों लोग कांवड़ लेने जाते थे वहाँ अब लाखों लोग जाने लगे हैं। वैष्णो देवी का नाम पहले हिमाचल से बाहर कोई नहीं जानता था लेकिन सरकारी सुविधाएँ वहाँ उपलब्ध कराये जाने से भारी भीड़ जुटने लगी है। यही अमरनाथ धाम व अन्य तीर्थों के साथ घटित हो रहा है। धूम्रपान और शराबखोरी को सिनेमा के साथ-साथ टेलीविजन ने भी कम प्रचारित नहीं किया है। यही स्थिति मांसाहार का प्रसारण होने से बनती चली गई।

रूढ़िवादी धर्म तन्त्र, नशा माफिया, बहुराष्ट्रवादी कम्पनियों व सत्ताधारी राजनीतिज्ञों ने एक ऐसा चक्रव्यूह रच दिया है कि एक आम भारतीय के आर्थिक शोषण, सामाजिक शोषण और धार्मिक शोषण की सम्भावनाएँ पहले से अधिक प्रबल और दृढ़ होती जा रही हैं। इस समस्या का सबसे अधिक दुर्बल पक्ष यह है कि इससे सतत संघर्षरत रहने वाला आर्य समाज आज अनेक कारणों से निष्क्रिय होता चला गया है और दूसरा कोई सशक्त माध्यम ऐसा नहीं है कि स्थिति का मुकाबले करने को मैदान में उतरे। प्रिण्ट मीडिया और टी.वी.

दोनों जिन पूंजीपतियों के हाथ में हैं वे रूढ़िवादी समाज से संबंध रखते हैं। पूंजीपति के हितों को दृष्टिगत रखते हुए वे नशाखोरी विरोधी आन्दोलन में किसी प्रकार का सहयोग नहीं देते और अपनी पौराणिक आस्था, संस्कार, साधना के कारण वे आर्य समाजी विचारधारा को क्यों भाव देंगे। यही कारण है, कि टी.वी. चैनलों पर वाकायदा ज्योतिष, तन्त्र-विद्या, भूत-प्रेत, मूर्ति पूजा तीर्थाटन, को महिमा-मण्डित कर धर्मभीरुता के संस्कार दिये जा रहे हैं।

ले-देकर पाखण्ड उन्मूलन का एक ही रास्ता बचना है कि आर्य समाज को संगठित कर पुनः सक्रिय किया जाये। विपुल साहित्य प्रकाशित हो, योजनाबद्ध ढंग से प्रचार-कार्य को गति दी जाये। धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया जाये। सर्वधर्म संघ की बैठकें बुला कर विवादित विषयों पर चर्चा सरलतम भाषा में वेद का प्रचार हो। डी.ए.वी. स्कूलों व गुरुकुलों से ही प्रचारक तैयार करके निकाले जायें। पाखण्ड को प्रश्रय देने वाली सरकारों के विरुद्ध प्रदर्शन हों और कानून बनवाने की प्रक्रिया तेज हो। एक ऐसी साझी मानव आचार संहिता तैयार हों जिनमें इन पाखण्डों को नकारा गया हो।

यह भी देखने में आ रहा है कि योग व अध्यात्म में रुचि व गति न रखने वाले आर्य समाजियों का आध्यात्मिक, मानसिक व आत्मिक बल इतना कमजोर हो जाता है कि वे भी फलित ज्योतिष, तन्त्र-विद्या आदि में फंसते चले जाते हैं और वैष्णो-देवी या किसी मजार पर भी मत्था टेकने जा पहुँचते हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि आर्य समाज में कुछ ऐसे विजातीय तत्व, असमाजिक तत्व, शरारती तत्व जिनमें अदिकांशतः पौराणिक मानसिकता व संघी प्रवृत्ति के लोग हैं, घुस आये हैं। आर्य समाज को न केवल पहले इन तत्वों से अपने घर को पाक-साफ रखने की कार्य-योजना बनानी है बल्कि अपने सदस्यों के आध्यात्मिक विकास अर्थात् उनके साधना पक्ष को भी सुदृढ़ बनाना है।

सत्य का मार्ग ही जीवन की सफलता का मार्ग है

-मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है ? इसके उत्तर में कह सकते हैं कि सत्य को जानना, समझना, उस पर गहनता से विचार करना, ऋषि दयानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों के जीवनचरितों व उपदेशों का अध्ययन करना, ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का सत्य ज्ञान कराने वाले वेद एवं सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों को प्राप्त करना व उनका अध्ययन करना, यह सब करके संसार व जीवनविषयक सत्य का निर्धारण करना और उसका पालन करना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्रतीत होता है। एक वैदिक प्रार्थना बहुत प्रचलित है- 'असतो मा सदागमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृत गमय'। इसमें कहा गया है - हे सृष्टि बनाने, चलाने व इसकी प्रलय करने वाले परमात्मन् ! आप सत्य व असत्य को जानते हैं। आप हमें असत्य से हटा कर सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा करें। मैं असत्य का आचरण न करूँ और जीवन में सदैव सत्य का ही आचरण करूँ, सदा सत्य व प्रकाश के मार्ग पर ही चलूँ और जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाऊँ।' इस वैदिक प्रार्थना में जो कुछ कहा गया है, उससे कोई भी मनुष्य असहमत नहीं हो सकता। एक अन्य प्रार्थना जिसे देश का ध्येय वाक्य भी कह सकते हैं, वह है 'सत्यमेव जयते'। इसका अर्थ है कि सत्य की ही सदा विजय होती है। सत्य कभी पराजित नहीं होता। अतः जिसकी सदा विजय हो और जो कभी पराजय को प्राप्त न हो, उसी को हमें मानना चाहिये व आचरण में लाना चाहिये।

जब हम अपने प्राचीन ऋषि मुनि व विद्वानों के जीवनों पर दृष्टि डालते हैं, तो पाते हैं कि उनका जीवन सत्य को जानने व उसके आचरण को ही समर्पित था। वह पर्वतों की कन्दराओं, घने वनों में स्थित आश्रमों व कुटिया बना कर वहाँ तप की साधना करते थे। तप का अर्थ ही सत्य को जानना व उसका आचरण करना होता है। सत्य अर्थात् ईश्वर के सत्य गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर उनका उसके अनुरूप स्तुति व स्तवन करना ही ईश्वर की पूजा कहलाता है। विश्व विख्यात ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि स्तुति का अर्थ स्तुत्य वस्तु के सत्य गुणों को जानकर उसका वर्णन करना होता है। ईश्वर की स्तुति की बात करें, तो इसके गुणों सत्य चित्त, आनन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निरभिमानी, पवित्र, धार्मिक, पक्षपात रहित होकर न्याय करने वाला, अनादि, नित्य, अमर, अविनाशी, अजन्मा, सृष्टि को बनाने चलाने, पालन करने व प्रलय करने वाला, सब जीवों को उनके कर्मों का फल देने वाला, जीवात्माओं को जन्म-मृत्यु और पुनर्जन्म देने वाला, अजर, अभय आदि गुणों का उच्चारण व प्रशंसा कर अपने गुणों को भी इसके अनुसार

बनाना होता है। ईश्वर व अपने से बड़ों की स्तुति करने से अहंकार का नाश होता है। अहंकार का नाश परमावश्यक भी है। अहंकारी मनुष्य का नाश हो जाता है। रावण व दुर्योधन के उदाहरण हमारे सामने हैं। ईश्वर व किसी महापुरुष की सत्य व यथार्थ स्तुति हमें नाश से बचाती है। किसी के प्रति नतमस्तक होने से अहंकार दूर हो जाता है। उसके प्रति श्रद्धा व आदर की भावना उत्पन्न होती है। ईश्वर सबसे महान व सर्वोत्तम सत्ता है, जिससे संसार के सभी मनुष्य व प्राणी लाभान्वित हैं। अतः सबको ईश्वर व परोपकारी, स्वार्थशून्य, चरित्रवान महात्माओं की स्तुति करनी चाहिये। महापुरुषों के जीवन में अधिकांश ईश्वर के समान व उसके जैसे न्यूनाधिक गुण होते हैं, जिससे संसार के सभी लोग, कोई किसी भी मत का अनुयायी क्यों न हो, उन महापुरुषों का मत-पन्थ की संकीर्ण मान्यताओं से ऊपर उठकर उनका सम्मान करते हैं। यही कारण है कि हजारों वर्ष बीत जाने पर भी श्री राम, श्री कृष्ण, चाणक्य, युधिष्ठिर सहित अर्वाचीन लोगों में महर्षि दयानन्द, योगी अरविन्द, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि को आज भी लोग सम्मान देते हैं और उन्हें याद करते हैं। देश के लिए शहीद सेना के जवानों के प्रति भी लोगों का हृदय भावुक होकर अश्रुधारा बहाने लगता है। इसका उदाहरण है कि आज से ६५ वर्ष पहले गाया गया गीत

'ऐ मेरे वतन के लोगो जरा आंख मेंबर लो पानी, जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी'

आज भी लोकप्रिय है। इसे सुन कर सभी देश भक्तों की आंखें नम हो जाती हैं। इस गीत में सत्य की शक्ति ही, छुपी हुई है जो हमें आकर्षित करती है और अपनी ओर खींचती है।

सत्य की सबसे अधिक प्रतिष्ठा विज्ञान के क्षेत्र में है। वहाँ युवक विज्ञान पढ़ कर व पूर्व के प्रौढ़ वैज्ञानिक सृष्टिविषयक सत्य रहस्यों की खोज में लग जाते हैं। पढ़े हुए का चिन्तन मनन करते हैं। नई खोज की योजना बनाते हैं। नये- नये प्रयोग करते हैं और उसके परिणामों का अध्ययन व विश्लेषण करते हैं। यह क्रम चलता रहता है। एक समय आता है कि जब उनका लक्ष्य सिद्ध हो जाता है। इसी प्रक्रिया को अपना कर विज्ञान आज यहां तक पहुंचा है कि जब उसे विज्ञान के द्वारा तृण व तिनके से लेकर ब्रह्माण्ड तक का अधिकांश ज्ञान तो प्राप्त हुआ ही है, उसने ऐसे अविष्कार भी किए हैं कि जिनसे आज हमारा जीवन अत्यन्त सुविधापूर्ण व आसान बन गया है। ऐसा सुविधापूर्ण जीवन सृष्टि के आदि काल के बाद कभी रहा हो, इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता। आज कम्प्यूटर व स्मार्ट फोन का युग है। संसार

हमारी मुट्ठी में आ गया है। कोई भी जानकारी प्राप्त करनी होती है, तो वह हमें गुगल की सहायता से कुछ ही क्षणों में ही सुलभ हो जाती है। इतिहास में ऐसे उन्नत युग की कहीं चर्चा नहीं है। विज्ञान आखिर है क्या ? इस पर विचार करें, तो इसका उत्तर यही मिलता है कि संसार के सत्य रहस्यों को जानना व उसका ज्ञान प्राप्त करना ही विज्ञान है। इस जाने हुए विज्ञान का उपयोग कर अपनी सुविधाओं की वस्तुओं का निर्माण करना ही आविष्कार है व आविष्कार से निर्मित उत्पाद विज्ञान की देन कहलाते हैं। जैसे-कम्प्यूटर, हवाई जहाज, रेलगाड़ी आदि। धर्म भी ईश्वर, आत्मा, मनुष्य जीवन के विभिन्न पक्षों से संबंधित सत्य रहस्यों की खोज व उसके आचरण का ही नाम है, जिसे साम्प्रदायिक मतों ने व राजनीति दलों ने अपनी वोट बैंक की नीति के कारण उपेक्षित बना दिया है। हम इस संसार को देखते हैं, तो इसकी विशालता को जानकर हमारा सिर घूम जाता है। संसार में ऐसे भी सूर्य पिण्ड बताए जाते हैं, जिसका प्रकाश अभी तक हमारी धरती पर नहीं पहुंचा है। प्रकाश की गति प्रति सेकिण्ड १,८६,००० मील है। इससे ब्रह्माण्ड की विशालता का ज्ञान होता है। हम जानते हैं कि कोई भी रचना बिना कर्ता के नहीं होती। अतः इतना विशाल सुव्यवस्थित ब्रह्माण्ड भी बिना एक कर्ता 'ईश्वर' के बन व चल नहीं सकता। हमें संसार को बनाने वाले उसी ईश्वर की खोज करनी है। उसे अपनी आत्मा में प्राप्त करना है। सच्चे विद्वानों व ज्ञानियों की शरण लेकर उनसे ईश्वर के स्वरूप व गुणों को जानना है। हमें अपनी आत्मा के स्वरूप व उसके अतीत व भविष्य पर भी विचार करने के साथ ज्ञानियों व पुस्तकों से उसका ज्ञान प्राप्त करना है और उसके उत्कर्ष व उन्नति के लिए पुरुषार्थ करना है। यह तभी हो सकता है कि जब हम सत्य की प्रतिष्ठा करेंगे और बुद्धि की जड़ता और अन्धविश्वासों से ऊपर उठेंगे। यदि परम्परागत मान्यताओं में बने रहेंगे, तो शायद हम सत्य को जान न सकें। हमें धर्म विज्ञानी व सत्य-धर्म शोधार्थी बनना होगा। इससे हमें अनेक नये रहस्यों का ज्ञान होगा जिससे हम देश व संसार का कल्याण कर सकते हैं। प्राचीन ग्रन्थ वेद, उपनिषद, दर्शन आदि को भी गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिये। ऐसा ऋषि मुनि व शास्त्रों के ज्ञाताओं का कथन है। सत्य में ही जीवन को लगाना और नये-नये बहुमूल्य मोतियों को प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। आइये ! जीवन के लक्ष्य "सत्य" पर विचार करें और उस को प्राप्त करने के लिए आज ही सत्य के मार्ग पर चलना आरम्भ कर दें।

స్వాతంత్ర్యం తరువాత

-గడిల అంజనేయులు

నేడు మనం స్వాతంత్ర్యము సంపాదించి ప్రజాస్వామ్య ప్రభుత్వాన్ని స్థాపించుకున్నాం. స్వాతంత్ర్యం పొందిన తర్వాత ఇక ఏమి చెయ్యాలి అనే ప్రశ్న ఎదురైంది. వెనుకబడినతనం దారిద్ర్యం మన దేశాన్ని పట్టి పీడిస్తున్న ముఖ్యమైన సమస్యలు. రెండువ సమస్య లక్షలాది మంది నిరక్షరాస్యులుగా ఉండుట. మూడవ ముఖ్యమైన సమస్య కులం, మతం ప్రాంతం పేరిట విచ్ఛిన్నకర ధోరణులు తలెత్తి దేశ ఐక్యతను దెబ్బ తీస్తున్నాయి. ఈ సమస్యలను పరిష్కరించుకునే గురుతర బాధ్యత మనపై ఉన్నది. స్వాతంత్ర్య భారతంలో ప్రతిపౌరుడు తన గురుతర బాధ్యతను గుర్తించాలి. ఇటువంటి క్లిష్టపరిస్థితులలో ఉపాధ్యాయుల బాధ్యత చాలా ఉన్నది.

మనకు స్వాతంత్ర్యం వచ్చింది కాని మనము దాని విలువను అర్థము చేసుకొని కాపాడ లేక పోతున్నాం.

పరాధీనంలోని “ప్రజలు” స్వాతంత్ర్య పౌరుల మధ్యగల వ్యత్యాసం మనకు తెలిసి ఉంటే దేశం ఎన్నోరెట్లు అభివృద్ధి చెంది ఉండేది.

ఈ బాధ్యత అన్ని తరగతుల ప్రజలకు వర్తిస్తుంది. అనగా రాజకీయ నాయకులకు, ఉపాధ్యాయులకు, వెనుకబడిన తరగతుల వారందరికీ, మన ఉపాధ్యాయులు సమస్యను వాస్తవిక దృష్టితో అర్థం చేసుకొని పౌరుల గురుతర బాధ్యతల గురించి పిల్లలకు ఇప్పటికీ బోధించాలి.

మనం మన దేశాభివృద్ధికి బాధ్యత వహించవలసి ఉన్నది. భారతదేశములో నివసించే ప్రతి ఒక్కరు. అనగా ప్రతి పౌరుడు కలిసి కట్టుగా పనిచేయాలి. మన బాధ్యతలను గుర్తించి ఉంటే ఇప్పటి కంటే మనం ఎక్కువ కష్టపడి, త్యాగ నిరతితో పని చేసే వాళ్ళం బాధ్యతలను గుర్తించి, దేశాభివృద్ధికి పాటుపడే ప్రజల వలననే దేశం యొక్క కీర్తి ఇనుమడిస్తుంది.

విద్యా విషయంగా చూస్తే, ముఖ్యంగా గ్రామ ప్రాంతాలలో ప్రభుత్వం పూర్తిగా విద్యా

వ్యాప్తి విషయము నిర్లక్ష్యం చేసినది విద్యారంగంలో నూతన విధానాలు మనదేశ విషయాలను దృష్టిలో ఉంచుకొని ప్రవేశ పెట్టవలెను. ఇప్పటికీ ఇంకనూ బ్రిటీష్ పాలనలో ఉన్న విద్యా విధానమునే అనుసరిస్తున్నారు. ఈ యొక్క బ్రిటీష్ విద్యా విధానమును పూర్తిగా మార్చి వేయవలెను.

పరిస్థితిలో ఉపాధ్యాయులుగా మనము చేయవలసిన పని ఇందులో ఉపాధ్యాయుల బాధ్యత ఎంత వరకు ఉన్నది ? అని ఆలోచించాలి. ప్రజాస్వామ్యంలో విద్యకు కీలకమైన పాత్ర కలదు ఉపాధ్యాయులు విద్యార్థులకు ఉత్తమ శిక్షణ ఇచ్చి వారిలో జిజ్ఞాసను రూపొందించి, వారిని భావి భారత పౌరులుగా తీర్చిదిద్దాలి.

ఉపాధ్యాయులు తాము బోధించే విద్య ద్వారా దేశంలో గొప్ప మార్పు తప్పక తీసుకురాగలరు. ఈ మార్పు దేశాన్ని శక్తివంతంగా, సుపంపన్నంగా మార్చుతుంది. అయితే ఈ విషయంలో ఉపాధ్యాయులకు గొప్ప గురుతర బాధ్యత ఉన్నదని చెప్పవచ్చును. ఒక విద్యార్థి తన జీవితంలో అనగా తొలి దశలో 15 సం॥ నుండి 16 సం॥ల వరకు పాఠశాలలో గడుపుతాడు. ప్రస్తుతము వీరిలో చాలా మంది ప్రాథమిక విద్యా స్థాయిలోనే పాఠశాలను విడిచిపెడుతున్నారు. విద్యార్థి దశలో పిల్లలు పాఠశాలలో విజ్ఞానాన్ని నూతన విషయాలను నేర్చుకుంటారు. యూనివర్సిటీ కంటే పూర్వం పిల్లలు పొందిన విజ్ఞానం చాలా మేధస్సు చురుకుగా పని చేస్తూ ఉంటుంది. ఇంతే గాకుండా చాలామంది విద్యార్థులు తమ చదువును ఇంగ్లీషీయట్ తరగతిలోనే చాలిస్తున్నారు. కొద్ది మంది విద్యార్థులు చిరుప్రాయంలో ప్రాథమిక సెకండరీ స్థాయి ఉపాధ్యాయుల ఆలస పాలనలో ఉంటారు కనుక ఈ స్థాయిలోనే విద్యార్థులలో వైజ్ఞానిక జిజ్ఞాసను పెంపొందించే విశిష్టమైన బాధ్యత ఉపాధ్యాయులపై ఉంటుంది.

ఉపాధ్యాయులు కూడా ఈ బాధ్యతలను

నెరవేర్చుటకు స్వతహాగా వారిలో జాతీయ భావన కలిగి యుండి, విద్యార్థులలో ఈ భావనను నెలకొల్పవలెను.

మనోభావాలలో మార్పు

ఉపాధ్యాయులలో జాతీయ భావన రావడానికి వారి దృక్పథంలో మౌలికమైన మార్పు రావలసిన అవసరం ఎంతైనా ఉంది. మనంచేసే పనిలో సమర్థతను పెంపొందించే ఉపాధ్యాయులను గురించి మనం ఆలోచించాలి. “నేను ఎప్పుడూ సమర్థవంతంగా పనిచేయ గలను” అని ప్రశ్నించుకోవాలి.

“ఎంత డబ్బు ఎక్కువ ముట్టచెప్పితే” అంత సమర్థవంతంగా పని చేయగలవు అనే దృక్పథంతో ఇంతవరకు మన వారు సంతృప్తి చెందుతున్నారు. కాని విదేశాలలో పని సమర్థవంతంగా నెరవేర్చుటకు డబ్బు ప్రధానం కాదు డబ్బు ఒక కారణం మాత్రమే. కాని మార్పు మన దృక్పథంలోనే రావాలి, భారత దేశపు పౌరునిగా దేశకీర్తిని పెంపొందించవలెను. డబ్బు కన్న మిన్న గౌరవ ప్రదమైన బాధ్యత, విదేశాపాలనలో మన దేశంలోని కొంత మంది వండితులు, శాస్త్రవేత్తలు, రాజనీతిజ్ఞులు, కళాకారులు విదేశముల డబ్బు కొరకు అమ్ముడు పోయిన సంగతి మనందరికీ తెలుసు అంటే డబ్బు ఆశతో, తమ విద్వత్తును, విజ్ఞానాన్ని విదేశములకు ధారపోశారు.

“ఇది మన దేశం” ఈ దేశానికి సంబంధించిన వారము ఈ దేశ సంక్షేమానికి మనమందరం బాధ్యులం మనము ప్రతి పనిని అంకిత భావముతో మూర్చిచేసి, సాటి మానవులకు సహాయం అందిద్దాం” అనే భావన మనలో కలగాలి అనేది మనదృక్పథం.

ఎప్పుడైతే ఈ దృక్పథంలో మౌలికమైన మార్పు వస్తుందో వ్యక్తుల వ్యక్తిత్వంలో గొప్ప సంచలనాత్మకమైన శక్తి పుట్టుకొస్తుంది. అటువంటి వారు సేవా భావనకు అంకితమై చైతన్యవంతులైతారు. ఇది డబ్బుకు అతీతంగా

ప్రత్యక్షమైన శక్తివంతమైన రూపం. గౌరవనీయ పౌరునిగా నిస్వార్థతతో పని చేస్తే మనలో మనపనిలోను ఊహించని మార్పు కనిపిస్తుంది జపానీయులు గొప్ప దేశాభిమానులు. వారు తమ చరిత్రను, సంస్కృతిని ఎంతో గౌరవిస్తారు. దేశపురోభీవృద్ధికి వారు ఎంతో శ్రద్ధ చూపుతారు. వారు విద్యాభ్యాసానికి విదేశాలకు వెళ్ళి, మళ్ళీ తమ దేశానికి తిరిగి వచ్చి, తాము నేర్చుకున్న విజ్ఞానాన్ని దేశ అభివృద్ధికి ఉపయోగిస్తారు. ఈ విషయంలో మాత్రం మనం చాలా వెనుకబడి ఉన్నాము ప్రపంచ దేశాలన్నింటిలో, దేశ భక్తి కొరవడిన పౌరులం మన మొక్కరమే. మనం ఎల్లప్పుడు మన కులం మన కుటుంబం మన ప్రాంతం, మన స్వార్థం గురించే ఆలోచిస్తాం. అయితే ఇటీవల కాలంలో మన దేశ ప్రజలు కూడా జాతీయ భావాలు పెంపొందించు కుంటున్నారు. భిన్నత్వంలో ఏకత్వం సాధించే మార్గంలో ఇదొక రాజకీయ చైతన్యమని చెప్పాలి. ఈ ఏకత్వ సాధన కొరకు ఉపాధ్యాయులందరిని సంఘటితము కావాలని దేశం పిలుపు నిస్తున్నది ఈ పరిస్థితులలో ఉపాధ్యాయునిగా పని చేయుటకు నియమించినచో నాయొక్క కర్తవ్యమేమిటి ?

ఉపాధ్యాయునిగా మారుమూల గ్రామాల్లో పని చేయ వలసి వచ్చినప్పుడు, నేను కేవలం జీత బత్తెము కొరకు ఉద్యోగిగా విధిని నిర్వహించాలా ? లేదా గ్రామాలలోని పిల్లలకు సేవా భావముతో విద్యను బోధించాలా ? ఈ రెండింటిలో ఏది ఎన్నుకోవాలి / సేవాభావంతో విధిని నిర్వహించినట్లయితే దేశ నిర్మాతల జాబితాలో పేరు నమోదవుతుంది.

ఈ జాతీయ దృక్పథం/మార్పు భారత పౌరులలో కలుగుటకు గొప్ప ప్రయత్నం జరుగవలెను ఏ పని కూడా చిన్నదిగా పెద్దదిగా ఉండదు. కేవలము మన దృక్పథంలోనే ఈ తారతమ్యమున్నది ఒక ఉపాధ్యాయుడు మారుమూల గ్రామాలలో పని చేస్తూ, తక్కువ వేతనం లభిస్తుండన్న భావంతో ఉంటే. అతడు చిరునామా లేని వ్యక్తిగా భావింపబడతాడు. కాని అంకిత భావంతో నిస్వార్థంతో ఆ పనిని నిర్వహించినట్లయితే, అతడు గొప్ప అంతస్తుకు చేరుకోగలుగుతాడు. అన చేసేపని చిన్నదో, పెద్దదో మనమే నిర్ణయించుకొవాలి. అంతా

మన దృక్పథంపై ఆధారపడి ఉంటుంది.

ఉదా: ఒక పెద్ద మనిషి చిన్నపని సాధించి, దానికి గొప్ప ప్రాధాన్యత ఇస్తాడు. అదే మాములు మనిషి పెద్ద కార్యాన్ని నిర్వహించి అది మనకు చిన్న పనిగా తోస్తుంది.

మనలోని గొప్పతనాన్ని మనం స్వయంగా పెంచుకోవాలి మరియు మనం నిర్వహించే కార్యానికి గొప్పదనాన్ని సాధించాలి దీనినే వేదాంతములో గొప్ప శక్తిగా పేర్కొన్నాం.

విద్యార్థులలో ప్రేరణ కల్పించాలి

ఉపాధ్యాయులు కేవలం పాఠాలు చెప్పడమే కాకుండా, విద్యార్థులలో దేశభక్తి దేశము విషయాల చెప్పే వారికి ప్రేరణ కల్పించాలి. విద్యార్థి జీవితం అతని నైతిక ప్రవర్తనపై ఉపాధ్యాయుని ప్రేరణ ఉండవలెను. వారిని భావిపౌరులుగా తీర్చిదిద్ది భవిష్యత్తులో జాతీయ జీవనంలో వారిని భాగస్వాములుగా చేయాలి. ఇవన్నీ కూడా విద్యార్థులు ఉపాధ్యాయులపై అభిమానము ఉన్నప్పుడు చేయవలెను. మరొక విషయం ప్రజాస్వామ్యంలో పురుషులతో స్త్రీలు ప్రతి విషయములో సమానమని విద్యార్థులకు బోధించాలి. సంఘంలో పేరుకొని పోయిన అంటరాని తనాన్ని, కుల వ్యవస్థను తొలగించి జాతీయ ఐక్యత సాధించవలసిన విషయం కూడా బోధించాలి.

రాజ్యాంగంలో చెప్పబడిన అనేక నిర్దిష్టమైన ప్రజా శ్రేయస్సు విషయాలను, హక్కులను, బాధ్యతలను తెలియచెప్పాలి. పిన్న వయసులో విద్యార్థులలో మనో వికాసం కలుగుతుంది. ఈ తరుణంలోనే విద్యార్థులకు సాంఘిక బాధ్యతను, జాతీయ భావం, నిస్వార్థ సేవ గురించి వివరించాలి ఇక్కడే ఉపాధ్యాయులు చరిత్ర, సంస్కృతి ఆధ్యాత్మిక చింతన, మన దేశ నాయకుల త్యాగం మరియు నిస్వార్థ భావం గల వారి కథలను కూడ విద్యార్థులకు బోధించాలి.

ఉపాధ్యాయులు పాఠశాలలో బోధించే బోధనలపైనే రాసున్న తరం అధారపడి ఉన్నది. నేటి విద్యార్థులే రాసున్న రోజుల్లో జాతీయ జీవితంలో బాధ్యతలను స్వీకరించడానికి సమర్థవంతులుగా తయారు చేయాలి మన ప్రాచీన సంస్కృతి పై ఆధారపడిన

విద్యాబోధనలను, క్రమ శిక్షణ మన పాఠ్య ప్రణాళికలతో పాటు విద్యార్థులకు వయస్సునుండే బోధించవలెను నేటి విద్యార్థులను భావి భారత పౌరులుగా నిర్మాణము చేయవలసిన బాధ్యత ఉపాధ్యాయులపై ఉన్నది.

వ్యక్తి వికసిత వ్యక్తిగా రూపొందుట

ఉపాధ్యాయులు తరగతి గదిలోకి ప్రవేశించగానే మొట్టమొదట, ఒకసారి తరగతి గదిని నిశితంగా పరిశీలించి మన ముందున్న విద్యార్థులను చూచి సంతోషంగా పలకరించ వలెను. “ఈ పిల్లలంతా ఎవరు ? నేను ఇక్కడ ఏమి చేయాలి ? అని ప్రశ్న వేసుకుంటే మనకు వెంటనే జవాబు దొరుకుతుంది.

“సంఘంలోని వివిధ తరగతుల నుండి ఈ విద్యార్థులు విజ్ఞాన సముపార్జన కొరకు ఇక్కడికి వచ్చారు. శతాబ్దాల తరబడి వీరికి ఈ అవకాశం రాలేదు. ఈ విద్యార్థులలో కొందరు మారుమూల గ్రామాల నుండి ఇక్కడికి విద్యా సముపార్జనకై వచ్చారు. ఉపాధ్యాయుడుగా విద్యార్థుల యొక్క వ్యక్తిత్వాన్ని ప్రేరణ కల్పించే దృష్టితో పాఠాలు బోధించవలెను.

మనము చెప్పే ప్రతి పదము విద్యార్థులలో ప్రేరణ కలగ చేస్తుంది. అప్పుడు మనము కేవలం ఉద్యోగము కొరకు వనిచేసే ఉపాధ్యాయునిగా కాకుండా నిజమైన విద్యదాతగా. పరిపూర్ణ పౌరునిగా గుర్తింపు వస్తుంది.

పిల్లలో వ్యక్తిత్వ వికాసము తనను తాను తెలుసుకునే జ్ఞానము సుమారు 2 సం॥ నుండి 25 సం॥ వయస్సులో ప్రారంభమౌతుంది. ఐదు సంవత్సరాల వయస్సు వరకు ఈ వికాసం నిరంతరంగా అభివృద్ధి చెందుతూ ఉంటుంది. తర్వాత విద్యనభ్యసించుట వలన క్రమంగా వయస్సుతో పాటు, వారి బుద్ధి వికసించును ఇదంతా ఉత్తమ ఉపాధ్యాయుల వలననే సాధ్య పడుతుంది, తగిన సమయముతో వ్యక్తిత్వ వికాసము కాకుంటే అట్టి పిల్లలు దేశానికి సమస్యగా తయారవుతారు.

ఈ సందర్భంగా మనము సంస్కృతం లేక హిందీ భాషలో రెండు వదాలను ఉదాహరణగా, తీసుకోవచ్చును “వ్యక్తిత్వం అనగా అసాధరణ వ్యక్తిత్వం మరియు” వికసిత

వ్యక్తిత్వం అనగా అసాధారణ వ్యక్తిత్వం పరిణతి పొందిన వ్యక్తిత్వమని చెప్పుకోవచ్చు. మొదట పిల్లలు వ్యక్తిగా నుండి, తర్వాత వికసిత వ్యక్తిత్వానికి ఎదుగుతారు. సాంఘికంగా చూస్తే మారుమూల గ్రామాల నుండి పాఠశాలకు వచ్చిన పిల్లవానికి వ్యక్తిత్వం గురించి అంతగా తెలియదు, దీనికి వారు ఉండే పరిసరాల్లో ముఖ్య కారణం. అయితే పాఠశాలకు రావడము మొదలైన తర్వాత ఈ పిల్లలో క్రమంగా వ్యక్తిత్వం వికాసం చెందడం మొదలౌతుంది. పిల్లల వ్యక్తిత్వ, మనో వికాసానికి ఆత్మాభిమానం పెంపొందుటకు పాఠశాల మరియు పరిసరాలు ముఖ్య పాత్ర వహిస్తాయి.

మన దేశంలో శతాబ్దాలుగా ప్రజలు సాంఘికంగా వెనుక బడియున్నారు. విద్యావ్యాప్తి ద్వారా సాంఘికంగా వీరు ఇప్పుడిప్పుడే అభివృద్ధి పథంలో నున్నారు, వ్యక్తిత్వ వికాసం జాగృతం కాకుండా, కేవలము రెండవ సాధనమైన వ్యక్తిగత వికాసం దేశానికి హాని చేస్తుంది. వైదిక పరంగా చూస్తే ఆధ్యాత్మిక వికాసానికి వ్యక్తిత్వ వికాసము మొదటి మెట్టు. మనమంతా స్వతంత్రంగా జీవిస్తూ పౌర హక్కులను కలిగియున్నాం, మనకు అది కావాలి ఇది కావాలి అని అడిగే స్వేచ్ఛ హక్కు మనకున్నది.

కాని సాంఘిక బాధ్యతలను స్వీకరించే జ్ఞానం మనలో లోపించింది. ఇట్టి పరిస్థితిని మనో వికాసం లోపించిన దీనిని స్వేచ్ఛగా చెప్ప వచ్చును. కనుక కొన్ని పరిధులకు అతీతంగా కేవలం వ్యక్తిగత వికాసం.

దేశ పురోభివృద్ధికి సాంఘిక బాధ్యత స్వీకరించడానికి, వ్యక్తిత్వ మనోవికాసానికి గొప్ప అపాయము కలుగు చేస్తుంది.

సాంఘిక బాధ్యతలు స్వీకరించడానికి వ్యక్తిత్వ మనో వికాసానికి విద్యా వ్యాప్తి చాలా అవసరం. సాంఘిక బాధ్యతలను స్వీకరించుట వలన ఐక్యత వర్ధిల్లుతుంది మరియు దేశ సమైక్యతకు గట్టి పునాదులు, ఏర్పడుతాయి.

ప్రస్తుతం మనలో ఐక్యతా భావం, దేశ సమైక్యతా భావం లోపించింది, దీనికి ముఖ్య కారణం వ్యక్తిత్వ వికాసం లోపించడమే అని చెప్పవచ్చును.

ओजस्वी वैदिक प्रवक्ता आचार्य ज्ञानेश्वर जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा
आ.प्र.-तेलंगाना
की ओर से
विनम्र श्रद्धांजलि



आचार्य ज्ञानेश्वर जी का आकस्मिक निधन आर्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान करें। आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

लक्ष्मण सिंह ठाकुर विठ्ठल राव आर्य
प्रधान सभा मंत्री सभा

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड, गुजरात के अधिष्ठाता, ओजस्वी एवं कान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता, आचार्य ज्ञानेश्वर जी का ३ नवंबर रात्रि करीब १ बजे हृदयाघात से देहावसान हो गया है. बीकानेर के एक प्रतिष्ठित स्वर्णकार परिवार में जन्मे आचार्य जी एम. ए. प्रथम वर्ष का अध्ययन करते हुए युवा अवस्था में ही आर्य समाज के संपर्क में आये। लगभग १४ वर्ष की अवस्था में गृह त्याग किया। गृह त्याग के कुछ दिनों बाद ही आर्य जगत की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी से संपर्क हुआ। उनके निर्देश अनुसार आर्ष गुरुकुल कालवा में आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक के पास लगभग साढ़े छः वर्ष तक व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया एवं कुछ अध्यापन भी किया। इसके पश्चात ज्वालापुर में गुरुकुल काँगड़ी के उपकुलपति प्रो. रामप्रसाद जी वेदालंकार से निरुक्त शास्त्र का अध्ययन किया तथा स्वामी दिव्यानन्द जी से काव्यालंकार व छंदशास्त्र का भी कुछ अध्ययन किया। पूज्य स्वामी सत्यपति जी के साथ विभिन्न प्रान्तों में परिभ्रमण करते हुए पाँच दर्शनों व उपनिषदों का अध्ययन किया। इसके अनन्तर देढ़ वर्ष तक वैदिक धर्म का प्रचार एवं योग शिविरों का आयोजन किया। पूज्य स्वामी सत्यपति जी की विशेष प्रेरणा से उच्च स्तर के योगाभ्यास व दर्शनों के अध्ययन हेतु आर्यवन, रोजड, गुजरात में आयोजित दर्शन योग प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित हुए, यह शिविर लगभग ढाई वर्ष चला। प्रतिभागियों को विशेष आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त हुई। जिससे इस योजना को स्थायी रूप देने का विचार किया गया तो पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने दर्शन योग महाविद्यालय नाम से आगे इस कार्य को चलाने का दायित्व उन्हें तथा उपाध्याय विवेक भूषण जी (वर्तमान नाम स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक) को दिया। इस महाविद्यालय से ५६(साठ) से भी अधिक आदर्श आचरण युक्त युवा दार्शनिक विद्वान तैयार हुए हैं इनमें से संन्यासी भी आर्य जगत को प्राप्त हुए हैं। आचार्य जी ने भारत के अनेक प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार तो किया ही, साथ-साथ १७ बार विदेश यात्रा करके वैदिक धर्म का नाद गूँजायमान किया। आपने दर्शन योग महाविद्यालय तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम जैसी परियोजनाओं के साथ-साथ, विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास, वैदिक आध्यात्मिक न्यास तथा विचार टी.वी. आदि संस्थाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन किया। कच्छ के भूकंप, सूरत की बाढ़ का प्रकोप आदि प्राकृतिक आपदाओं में पीड़ितों की सहायता का कार्य भी विशाल स्तर पर किया। आज आचार्य जी हमारे मध्य में नहीं रहें, परंतु उनके तपस्वी, कर्मठ, परोपकारमय जीवन व कार्यों की सुगन्ध का प्रसार कर गए हैं जो हजारों-हजारों महानुभावों को प्रेरणा पूंज बनकर उनका मार्गदर्शन करती रहेगी।



కృష్ణానంద విశ్వమార్కమే



స్వీహ బ్రహ్మ బభూవధ

వైదిక కన్యా గురుకులం

దయానందనగర్. టి. మాందాపూర్.
పోస్ట్: యస్. కొండాపూర్. పయ: రాజ్‌పల్లి.
మం: చిన్న శంకరంపేట్ (ఆర్). జిల్లా మెదక్.
తెలంగాణ, భారత్ - 502 117.

దూరవాణి : 9440153960, 7729915182.



మాతా నిర్మాత భవతి

చతుర్థ-శ (14వ) వార్షికోత్సవము

తీ: మార్గశీర్ష శుద్ధ పౌర్ణమి (03-12-2017 ఆదివారము)

ఉదయం 8-30 ని:లనుండి మధ్యాహ్నం 2-00వరకు

అహ్మనిత విద్వాంసులు

పూజ్యశ్రీ శ్రీ స్వామి బ్రహ్మనంద సరస్వతి గారు (కామారెడ్డి), పూజ్యశ్రీ మాతా నిర్మలా యోగ భారతి గారు (హైదరాబాద్),
పూజ్యశ్రీ ఆచార్య ఆనంద ప్రకాశ గారు (అలియాబాద్), పూజ్యశ్రీ ఆచార్య ఉదయన గారు (పిడిచెడ్),
శ్రీమతి ఆచార్య నీరజ గారు, శ్రీ ఆచార్య భవభూతిగారు (అలియాబాద్), శ్రీ ఆర్కవి ప్రణవ కుమార్ గారు (నిజామాబాద్),
శ్రీ వేదశ్రవ శాస్త్రి గారు, (రామారెడ్డి), శ్రీమతిశ్రీ ఓరుగంటి లక్ష్మీదేవి రంగయ్య గార్లు (మిర్యాలగూడ),
శ్రీమతిశ్రీ కళ్యాణి రవీంద్రనాథ గార్లు (తెనాలి), శ్రీమతి గంగాపార్వతి గారు, (తెనాలి).

ముఖ్య అతిథులు:- శ్రీమాన్ శ్రీయోగాచార్య ధర్మవీరుగారు (హైదరాబాద్), శ్రీమతి సుఖదాదేవి గారు (జబ్బర్),
వి-రిఫ్ట అతిథులు:- శ్రీమతి శ్రీ యం. పద్మాదేవేందర్ రెడ్డి గారు, (తెలంగాణ శాసనసభ డిప్యూటీ స్పీకర్, మెదక్ శాసనసభ్యులు)
శ్రీమాన్ శ్రీ విరలేరావు గారు, (మంత్రి, లక్ష్మ ప్రతినిధి సభ, హైదరాబాద్)
సమ్మాన్య అతిథులు:- శ్రీ తిమ్మకృష్ణ సిద్ధాగౌడ్ (సర్పంచ్, టి. మాందాపూర్),
శ్రీమతి శ్రీ యల్. స్వరూపసురేందర్, (జడ్.పి.టి.సి. శంకరంపేట (రా))
శ్రీమతి శ్రీ భీమరి పెంటమ్మయాదగిరి, యం.పి.టి.సి. (టి. మాందాపూర్).

విశిష్టాతిథి

శ్రీమతి శ్రీ యం. పద్మాదేవేందర్ రెడ్డి జీ (ఉపస్పీకర్, తెలంగాణ శాసనసభ, మెదక్ యమ్.యల్.ఎ.)
శ్రీ విఠలరావ జీ (మంత్రి, ఆర్యప్రతినిధి సభ, హైదరాబాద్)



స్వాగత గణ

శ్రీ మురళీ బ్రహ్మచారి జీ
(సంరక్షక)

ఆచార్య సునీతి జీ
(సంస్థాపకాధ్యక్ష)

శ్రీ బాశెడీ సత్తయా జీ
(కోశాధ్యక్ష)

9361717849
9366811532

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్వీభాషా పత్రిక

Editor: Vithal Rao, M.Sc. LL.B., Sahityaratna

Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.

Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax : 040-24557946

Request to donate Rs. 250/- సంపాదకులు -విరల్ రావు, మంత్రి నభ

To,

Swarnanand ji Saraswath
maj Mandir,
n Road,
-1100

ఆంధ్రజ్యోతి

మహాబూబ్ నగర్

4

తదివారం 4 నవంబర్ 2017

సెట్

భగవంతుడు సర్వంతర్యామి

• రయానందుడు సంఘసంస్కర్త • వేదాంత తాత్పర్యబోధన
• యజ్ఞాంశేనే ప్రకృతి శుద్ధి • ఆర్య సమాజం ఉద్దేశం

పాఠశాల: సామంతాచార్య పూర్వ ఆర్యసమాజం నందు సంస్కరణార్థంగా ప్రారంభించబడింది. సంస్కరణార్థంగా మూలంగా పరిగణిస్తారు. ఎలాంటి మూల సంస్కరణకు ఇవకావాలి కంటే ఆర్యసమాజం నిర్మాతలు తెలుసుకున్నారు. భగవంతుడికి ఒక రూపం లేదని ఇక్కడ చిట్టచు విశ్వసిస్తారు. ఈశ్వరుడు, సర్వదా నంద స్వరూపుడు, విరాజితుడు, సర్వశక్తిమంతుడు, సర్వాంతర్యామి, పవిత్రుడు స్వచ్ఛత్రయస్త్రై యుక్తుడు. ఆర్యసమాజం సత్యం, న్యాయాన్ని మాత్రం విశ్వసిస్తోందని చెప్పాలి. సమాజంలో అన్యాయం ఎవరికీ జరిగినా వారి పక్షం మాత్రమే నిలబడుతుంది స్త్రీ పరుషులను సమానంగా చూస్తోందన్నారు.

1942లో హైదరాబాద్ నుంచి పాఠశాలకు ఆర్య సమాజ ప్రచారం చేసేందుకు పాఠశాలకు పరిష్కరించిన కేంద్రంలో జేబు నారాయణరావును కలిశారు. కాలక్రమే దాని ప్రాధాన్యతాపరమైన ఆర్యసమాజ భవనాన్ని నిర్మించి గ... మనకి చెప్పిన మాత్రం ఏమిటో? ఏమిటో? ఏమిటో? ఏమిటో? ప్రతిపాది ప్రాథమికంగానే ప్రాథమిక సేవై పాఠశాలగా పేర్కొను. ప్రతి ఏడాది కనీసం పండుగకు జరిగేందుకు ఆర్యసమాజంలోని బయటపడిన అన్యాయాన్ని చూస్తోంది. సమాజావస్థలో కోసం చేసే కార్యక్రమాలు ఎక్కువగా చేస్తుంటారు. కేంద్ర కేంద్రంలో ఒక పాఠశాల ఏర్పాటు చేసి తక్షణ ఫలితాలే విధ్వంసమవుతున్నాయి.



కేంద్ర కేంద్రంలోని ఆర్యసమాజ భవనం

మొదటి పాఠశాల.

• యజ్ఞాంశేనే ప్రకృతి శుద్ధి

'యజ్ఞ' పైకేనే తమం కర్మ' అంటే మనం చేసే అన్ని కర్మలలో శ్రేష్టమైనది యజ్ఞం అని ఆర్యులు భావించారు. సకల పరమము, పాదీశ్వరులు, ఈ శ్రేష్ట అనుభవం, దేశసత్వబద్ధం, సర్వాంతర్యామి యజ్ఞం మూలమని ఆర్యసమాజ విశ్వసిస్తున్నారని యజ్ఞం పల్లె అన్న గారి, నీరు శుద్ధి అభ్యుదయ సమూహం.



విరల్ రావు ఆర్య ఆర్యసమాజ కార్యకర్తలతో యజ్ఞం చేస్తున్న దృశ్యం



యజ్ఞం చేస్తున్న మంత్రి జగదీశ్వరరెడ్డి (మి)

ఆర్యసమాజం ధార్మిక సామాజిక సంస్థ

ఆర్యసమాజం నందు సంస్కరణార్థంగా ప్రారంభించి కంటే సంస్కరణార్థంగా మూలంగా పరిగణిస్తారు. ఎలాంటి మూల సంస్కరణకు ఇవకావాలి కంటే ఆర్యసమాజం నిర్మాతలు తెలుసుకున్నారు. భగవంతుడికి ఒక రూపం లేదని ఇక్కడ చిట్టచు విశ్వసిస్తారు. ఈశ్వరుడు, సర్వదా నంద స్వరూపుడు, విరాజితుడు, సర్వశక్తిమంతుడు, సర్వాంతర్యామి, పవిత్రుడు స్వచ్ఛత్రయస్త్రై యుక్తుడు. ఆర్యసమాజం సత్యం, న్యాయాన్ని మాత్రం విశ్వసిస్తోందని చెప్పాలి. సమాజంలో అన్యాయం ఎవరికీ జరిగినా వారి పక్షం మాత్రమే నిలబడుతుంది స్త్రీ పరుషులను సమానంగా చూస్తోందన్నారు.



- విరల్ రావు ఆర్య, ఉమ్మడి రాష్ట్ర ఆర్యసమాజం

నిజాంను ఎదిరించిన సరేంద్ర

హైదరాబాద్ రాష్ట్ర విమోచనంలో ఆర్యసమాజ పాత్ర ప్రముఖమైంది. నిజాం నిరంకుశపాలనకు వ్యతిరేకంగా నిరసనలు చేసింది. ప్రజాక్షేమకార్యక్రమాలను నిర్వహించింది. అలాగే నియంత నిజాం నవాబుపై ఆర్యసమాజ నాయకుడు నారాయణరావు సేవార్ బాబు రాడి చేశారు. దాంతో నవాబు ఆర్యసమాజ నాయకులను నిర్బంధించి చిత్రపాతం లకు గురిచేశారు. - డా. భగవంతుడు సర్వంతర్యామి, ఆర్యసమాజ ఆధ్యక్షుడు



आर्य समाज
लाजपत नगर नई दिल्ली
के पुरोहित
पं. मेघश्याम जी सभा में



आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली के पुरोहित पं. मेघश्याम जी का सम्मान करते हुए सभा के प्रबंधक श्री श्रीनिवासजी आर्य ।

सभा में
आर्य समाज हापुड
के अधिकारी गण



श्री विजयेन्द्र कुमार गर्ग मंत्री आर्य समाज हापुड एवं उनके साथियों का सम्मान करते हुए सभा के कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor : Vithal Rao Arya • Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

संपादक : श्री विठ्ठलराव मंत्री सभा ने सभा की ओर से समता पॉवर प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।

प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.तेलंगाना, सुल्तान बाजार, हैदराबाद तेलंगाना-95.